हरिभूमि
सोनीपत भूमि
रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026

तापमान
अधिकतम 38.5 डिग्री से.
न्यूनतम 25.4 डिग्री से.

11 72 गांवों में एक साथ हुआ पौधरोपण

12 राज्यस्तरीय नेटबॉल मुकाबलों में दिखा दमखम

मनाली से लौट रहे दोस्तों की कार को ट्रक ने टक्कर मारी, दो की मौत, तीन गंभीर

■ गढ़ी कला फ्लाईओवर के पास भीषण हादसा, ट्रक चालक वाहन सहित फरार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ गन्नौर

शनिवार को दिल्ली-पानीपत राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक भीषण सड़क हादसे में दो युवकों की मौत हो गई, जबकि तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। पांचों दोस्त मनाली से लौट रहे थे। पुलिस ने अज्ञात ट्रक चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है। हादसा गढ़ी कला फ्लाईओवर के पास हुआ। पुलिस के अनुसार केरल के कोजीकोड निवासी अश्वीन साजी अपने दोस्तों आर्यन (मुंबई), सागर गोयल (जहांगीराबाद, बुलंदशहर), धनजीत यादव (लखनऊ) और अभिनव श्रीवास्तव (बलरामपुर) के साथ एक जुलाई को गुरुग्राम से मनाली घूमने गए थे। शनिवार सुबह सभी नेक्सन कार से गुरुग्राम लौट रहे थे। सुबह करीब 6:15 बजे गढ़ी कला फ्लाईओवर पर पीछे से आए एक अज्ञात ट्रक ने उनकी कार के बाईं ओर जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और सभी युवक उसमें फंस गए। हादसे के बाद ट्रक चालक वाहन सहित मौके से फरार हो गया। पुलिस हादसे की जांच में जुटी है।

गन्नौर। ट्रक की टक्कर के बाद क्षतिग्रस्त कार।

पुलिस ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया

सूचना मिलने पर गन्नौर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया। सोनीपत के नागरिक अस्पताल में चिकित्सकों ने सागर गोयल और आर्यन को मृत घोषित कर दिया। वहीं अश्वीन साजी, धनजीत यादव और अभिनव श्रीवास्तव को प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर हालत में निजी अस्पताल रेफर किया गया, जहां उनका उपचार जारी है। जांच अधिकारी पीएसआई बिट्टू रावल ने बताया कि अज्ञात ट्रक चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है। सागर गोयल के शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया गया है, जबकि आर्यन के परिजनों के महाराष्ट्र से पहुंचने के बाद पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

अशोक नगर में फायरिंग, गली से जा रही महिला के पैर में गोली लगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

शहर के अशोक विहार में आपसी रंजिश के चलते हुई फायरिंग में एक बुजुर्ग महिला घायल हो गई। शनिवार शाम हुई इस घटना के बाद क्षेत्र में अफरा-तफरी मच गई। घायल महिला को उपचार के लिए निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। यश ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि करीब एक सप्ताह पहले पड़ोसी विक्रम के साथ उसकी कहासुनी हुई थी। आरोप है कि इसी रंजिश के चलते शनिवार शाम विक्रम ने पहले हवाई फायर किए और फिर उसकी ओर गोली चला दी। शिकायतकर्ता के अनुसार उसने रिवॉल्वर को हटाने का प्रयास किया, जिससे गोली वहां से गुजर रही बुजुर्ग मूर्ति देवी के पैर में लग गई। घटना के बाद आसपास के लोग मौके पर एकत्र हो गए। पीड़ित पक्ष का कहना है कि दोनों परिवारों के बीच पहले से विवाद चला आ रहा है। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए। पुलिस प्रवक्ता रविंद्र सिंह ने बताया कि शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर लिया गया है। आरोपित की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की टीमें लगातार दबिश दे रही हैं।

घटनास्थल पर जांच करते पुलिसकर्मी।

खबर संक्षेप

भगवान परशुराम चौक पर रक्तदान शिविर कल

गोहाना। भारतीय सेना एवं शहीदों को समर्पित 'हमारा परिवार' संगठन की गोहाना इकाई की ओर से 6 जुलाई को भगवान परशुराम चौक (सोनीपत मार्ग टी-प्वाइंट) पर रक्तदान शिविर लगाया जाएगा। शिविर का आयोजन सुबह 9 बजे से शाम 3 बजे तक भागराम ट्रस्ट के सहयोग से होगा। गोहाना बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष वीरेंद्र आर्य मुख्य अतिथि होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता हरदीप सांगवान करेंगे, जबकि संयोजक की जिम्मेदारी महेश शर्मा मदीना निभाएंगे। आयोजन समिति में डॉ. राकेश कुमार सहित अन्य लोग शामिल है।

जानलेवा हमले में एक और आरोपी गिरफ्तार

सोनीपत। क्राइम यूनिट कुंडली ने जनवरी में हुए जानलेवा हमले के मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान गांव अटेरना निवासी नारायण के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार 5 जनवरी 2026 को राई थाना में दर्ज शिकायत में बताया गया था कि 3 जनवरी की रात हिमांशु मूंगफली लेने घर से निकला था। अगले दिन वह गंभीर रूप से घायल अवस्था में चौक पर मिला। परिजनों ने सीसीटीवी फुटेज और घायल के बयान के आधार पर कुछ लोगों पर डंडों से हमला करने और नहर में डुबोने का प्रयास करने का आरोप लगाया था। इस मामले में पहले गौतम और पवन को गिरफ्तार किया जा चुका है।

घर में चोरी का तीसरा आरोपी गिरफ्तार

सोनीपत। बहालगढ़ थाना पुलिस ने घर में चोरी के मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान जेजे कॉलोनी, बवाना (दिल्ली) निवासी माजिद के रूप में हुई है।पुलिस के अनुसार खेवड़ा निवासी सुनील ने शिकायत दी थी कि 25-26 फरवरी 2026 की रात वह परिवार सहित ड्यूटी पर था। सुबह लौटने पर घर के ताले टूटे मिले और डेढ़ लाख रुपये नकद सहित सोने के गहने गायब मिले थे।

एचटेट: कड़ी सुरक्षा के बीच 3168 अभ्यर्थियों ने दी परीक्षा

■ 13 केंद्रों पर हुई परीक्षा, 793 अभ्यर्थी रहे अनुपस्थित ■ आज टीजीटी और पीआरटी का होगा एग्जाम

> एआई निगरानी और सख्त जांच के बाद भावी शिक्षकों को परीक्षा केंद्रों में प्रवेश मिला

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा (एचटेट)-2026 के पहले दिन शनिवार को जिले के 13 परीक्षा केंद्रों पर लेवल-3 (पीजीटी) की परीक्षा कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई। परीक्षा के लिए पंजीकृत 3,961 अभ्यर्थियों में से 3,168 ने परीक्षा दी, जबकि 793 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहे। इस तरह उपस्थिति 79.98 प्रतिशत दर्ज की गई। रविवार को जिले में दो सत्रों में लेवल-2 (टीजीटी) और लेवल-1 (पीआरटी) की परीक्षाएं होंगी। टीजीटी परीक्षा सुबह 10 से दोपहर 12:30 बजे तक तथा पीआरटी परीक्षा दोपहर 3 से शाम 5:30 बजे तक आयोजित होगी। टीजीटी के लिए 6,843 और पीआरटी के लिए 2,964 अभ्यर्थी परीक्षा देंगे। नकल रोकने के लिए हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड ने इस बार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित निगरानी प्रणाली का उपयोग किया। अधिकारियों ने मुख्यालय से सभी परीक्षा केंद्रों पर लाइव मॉनिटरिंग की। सभी केंद्रों पर बायोमेट्रिक सत्यापन, मेटल डिटेक्टर से जांच और बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था लागू रही। अभ्यर्थियों को परीक्षा केंद्र में प्रवेश से पहले दस्तावेजों की जांच, शारीरिक तलाशी, बायोमेट्रिक सत्यापन, अंगूठे के निशान और हस्ताक्षर की प्रक्रिया से गुजरना पड़ा। परीक्षा केंद्रों पर जैमर और सीसीटीवी निगरानी की व्यवस्था भी रही। नकल रोकने के लिए केंद्रों के आसपास धारा-163 लागू रही तथा फोटोस्टेट की दुकानें बंद रखी गईं। परीक्षा केंद्रों पर दोपहर 12:50 बजे से प्रवेश शुरू हुआ, जबकि दोपहर दो बजे के बाद किसी भी अभ्यर्थी को प्रवेश नहीं दिया गया। कई अभ्यर्थी अंतिम समय में दौड़ते हुए परीक्षा केंद्र पहुंचे।

सोनीपत। परीक्षा केंद्र के बाहर लगे बोर्ड पर रोल नंबर दिखते अभ्यर्थी।

कड़ी सुरक्षा

अभ्यर्थियों के लिए 15 रोडवेज बसें रिजर्व, हेल्प डेस्क भी बनाया

सोनीपत। एचटेट परीक्षा के दौरान अभ्यर्थियों की सुविधा के लिए हरियाणा रोडवेज ने सोनीपत बस अड्डे पर 15 विशेष बसें रिजर्व रखीं। प्रत्येक परीक्षा केंद्र के लिए पर्याप्त संख्या में अभ्यर्थी होने पर बसों को रवाना किया गया।

इसके लिए प्रति अभ्यर्थी मात्र 10 रुपये किराया निर्धारित किया गया। बस अड्डे पर हेल्प डेस्क और रूट प्लान भी उपलब्ध कराया गया, ताकि बाहर से आने वाले अभ्यर्थियों को परीक्षा केंद्र तक पहुंचने में परेशानी न हो। बस अड्डा प्रभारी सुरेंद्र दुग्गल ने बताया कि परीक्षा को देखते हुए चालक और परिचालकों की छुट्टियां भी रद्द कर दी गई थीं, जिससे सभी अभ्यर्थियों को समय पर परीक्षा केंद्र तक पहुंचाया जा सके।

नाबालिग से दुष्कर्म के मामलों में दो आरोपी गिरफ्तार

सोनीपत। सोनीपत पुलिस ने नाबालिग लड़कियों से दुष्कर्म के दो अलग-अलग मामलों में कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। दोनों को अदालत में पेश करने के बाद न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। दोनों मामलों में पीड़िताओं के बयान दर्ज कराए गए और पॉक्सो अधिनियम के तहत कार्रवाई की गई।पहले मामले में राई थाना पुलिस ने सीतापुर (उत्तर प्रदेश) निवासी विकास को गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार 16 फरवरी 2026 को दर्ज शिकायत में बताया गया था कि 15 फरवरी को शिकायतकर्ता की नाबालिग बहन सब्जी लेने के लिए घर से निकली थी, लेकिन वापस नहीं लौटी। जांच के दौरान किशोरी को बरामद कर उसके बयान मजिस्ट्रेट के समक्ष दर्ज कराए गए तथा काउंसलिंग कराई गई। जांच में दुष्कर्म की पुष्टि होने पर पॉक्सो अधिनियम की धाराएं जोड़कर आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। दूसरे मामले में कुंडली थाना पुलिस ने बस्ती (बिहार) निवासी श्याम मनोहर, हाल निवासी करोल बाग (दिल्ली), को गिरफ्तार किया। 23 जून 2026 को दर्ज शिकायत के अनुसार शिकायतकर्ता की नाबालिग बेटी 22 जून को बिना बताए घर से चली गई थी। जांच में दुष्कर्म की पुष्टि होने पर आरोपी को पॉक्सो अधिनियम के तहत गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

छेड़छाड़ और मारपीट का आरोपी गिरफ्तार

सोनीपत। बहालगढ़ थाना पुलिस ने युवती से छेड़छाड़, मारपीट और जान से मारने की धमकी देने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

आरोपी की पहचान मुजफ्फरपुर (बिहार) निवासी रोहित, हाल निवासी बहालगढ़, के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार 30 जून 2026 को पीड़िता ने शिकायत दी थी कि रोहित ने उसके साथ छेड़छाड़ की। विरोध करने पर उसने थप्पड़ मारकर जान से मारने की धमकी दी। शिकायत के आधार पर बहालगढ़ थाना में भारतीय न्याय संहिता की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया। जांच के दौरान पीड़िता के बयान मजिस्ट्रेट के समक्ष दर्ज कराए गए तथा लीगल एड के माध्यम से काउंसलिंग कराई गई। इसके बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। मामले की जांच जारी है।

चिट फंड और उधार के नाम पर 14 लाख की ठगी

■ पुलिस ने दंपती सहित तीन पर केस दर्ज किया

सोनीपत। मोहन नगर में अवैध चिट फंड और उधार के नाम पर करीब 14 लाख रुपये की धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। ज्ञान नगर निवासी प्रवीण कुमार की शिकायत पर पुलिस ने एक दंपती समेत तीन लोगों के खिलाफ अनियमित जमा योजनाओं पर प्रतिबंध (बीयूडीएस) अधिनियम और अन्य धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। शिकायत के अनुसार रोहतक के गांव बोहर निवासी जोगेंद्र उर्फ लीलू, उसकी पत्नी सुमन और जोगेंद्र के मामा जयकिशन ने भरोसे का फायदा उठाकर वर्ष 2016 में उन्हें चिट फंड कमेटियों में निवेश करने के लिए प्रेरित किया। शुरुआत में समय पर भुगतान कर विश्वास जीता गया, लेकिन बाद में बड़ी कमेटियां चलाकर कथित तौर पर धोखाधड़ी की गई। प्रवीण का आरोप है कि जुलाई 2023 से मई 2024 के बीच उन्होंने कमेटियों में 7.95 लाख रुपये जमा किए, लेकिन केवल 71,700 रुपये ही वापस मिले। इसके अलावा आरोपियों ने कार खरीदने और अन्य जरूरतों के नाम पर छह लाख रुपये नकद उधार लिए। शिकायतकर्ता के क्रेडिट कार्ड से 40 हजार रुपये से अधिक खर्च भी कराया गया।

आरोप है कि आरोपियों ने एक लाख रुपये का चेक दूसरे खाते में जमा कर दिया और शिकायतकर्ता के नाम पर बजाज फाइनेंस से मोबाइल फोन खरीदकर स्वयं इस्तेमाल किया, जिसकी किस्तें अभी भी शिकायतकर्ता भर रहा है। पैसे मांगने पर आरोपियों ने जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

वाहन ट्रांसफर का झांसा देकर ठगी

सोनीपत। मुरथल थाना क्षेत्र के गांव मीमारपुर गढ़ी निवासी दिलशाद ने कैंटर का स्वामित्व हस्तांतरण कराने के नाम पर लाखों रुपये की धोखाधड़ी का आरोप लगाते हुए वाहन मालिक और बैंक के दो अधिकारियों के खिलाफ मामला दर्ज कराया है।शिकायत के अनुसार उन्होंने बागपत निवासी रविंद्र धामा से छह लाख रुपये में कैंटर खरीदा था। आरोप है कि ऋण चुकाने के बाद एनओसी देकर वाहन ट्रांसफर कराने का भरोसा दिया गया। दिलशाद का कहना है कि उन्होंने वाहन की 34 किस्तें भी जमा कराईं। बाद में वाहन मालिक ने उनकी मुलाकात बैंक कर्मचारी नवीन और शाखा प्रबंधक मनोज से कराई, जिन्होंने ट्रांसफर का आश्वासन देकर दस्तावेज अपने पास रख लिए।बाद में पता चला कि कैंटर पर 10.97 लाख रुपये का नया ऋण ले लिया गया है। विरोध करने पर मारपीट, जान से मारने की धमकी देने और कैंटर छीनने का भी आरोप लगाया गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

■ 60 हजार बचाने के चक्कर में गंवा सकते हैं 82 लाख रुपये

■ कंपाउंडिंग बताता है कि निवेश में समय ही सबसे बड़ी पूंजी

■ जल्दी शुरुआत करने वालों को मिलता है सबसे बड़ा फायदा

एसआईपी में सिर्फ 1 वर्ष की देरी पड़ सकती है भारी

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले ज्यादातर लोग यह मानते हैं कि जितना अधिक पैसा निवेश करेंगे, उतना बड़ा फंड तैयार होगा। यह बात सही है, लेकिन पूरी सच्चाई नहीं। निवेश विशेषज्ञों का कहना है कि निवेश की रकम से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है निवेश की शुरुआत का समय। यदि कोई व्यक्ति एसआईपी शुरू करने में सिर्फ एक साल की भी देरी करता है तो उसे भविष्य में लाखों रुपये का नुकसान उठाना पड़ सकता है। वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार कंपाउंडिंग की ताकत समय के साथ सबसे अधिक काम करती है। यही वजह है कि एसआईपी की पहली किस्त की कीमत आखिरी किस्त से कई गुना ज्यादा होती है। एक साल की देरी केवल 12 किस्तों का नुकसान नहीं कराती, बल्कि उन किस्तों पर मिलने वाले वर्षों के रिटर्न से भी निवेशक वंचित रह जाता है।

क्यों सबसे अहम है पहली एसआई

कंपाउंडिंग का अर्थ है कि निवेश पर मिलने वाला रिटर्न भी आगे चलकर रिटर्न कमाने लगता है। यानी आपका पैसा केवल बढ़ता नहीं, बल्कि बढ़ा हुआ पैसा भी कमाई करता है। यदि कोई निवेशक 30 वर्ष तक लगातार एसआईपी करता है, तो पहले साल जमा की गई रकम को पूरे 30 वर्षों तक बढ़ने का मौका मिलता है। वहीं अंतिम वर्ष में जमा की गई राशि को केवल कुछ महीनों का ही समय मिलता है। यही कारण है कि शुरुआती निवेश की ताकत सबसे अधिक होती है। विशेषज्ञ इसे निवेश की दुनिया का सबसे बड़ा जादू मानते हैं। जितनी जल्दी शुरुआत होगी, कंपाउंडिंग उतना ही अधिक काम करेगी।

एक साल की देरी का बड़ा नुकसान

मान लीजिए कोई निवेशक हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी करता है और उसे औसतन 12 प्रतिशत वार्षिक रिटर्न मिलता है। यदि वह लगातार 30 वर्षों तक निवेश करता है तो कुल निवेश राशि 18 लाख रुपये होगी। इस अवधि के अंत में उसका फंड लगभग 1.76 करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है। लेकिन यदि वही निवेशक एसआईपी शुरू करने में सिर्फ एक वर्ष की देरी कर देता है और केवल 29 वर्ष निवेश करता है, तो उसका अंतिम फंड घटकर लगभग 1.56 करोड़ रुपये रह जाएगा। यानी केवल 60 हजार रुपये (12 किस्तें) का निवेश टालने की कीमत लगभग 20.43 लाख रुपये हो सकती है। यह उदाहरण बताता है कि निवेश में सबसे बड़ा नुकसान बाजार की गिरावट नहीं, बल्कि समय गंवाने से होता है।

जितनी बड़ी एसआई, उतना नुकसान

एक साल की देरी का असर निवेश राशि बढ़ने के साथ और भी ज्यादा दिखाई देता है। यदि कोई निवेशक हर महीने 2,000 रुपये की एसआईपी करता है तो एक साल की देरी से लगभग 8.17 लाख रुपये का संभावित नुकसान हो सकता है। 10,000 रुपये मासिक एसआईपी करने वाले निवेशक के लिए यही नुकसान बढ़कर लगभग 40.87 लाख रुपये तक पहुंच सकता है। वहीं यदि मासिक एसआईपी 20,000 रुपये की है तो केवल एक साल की देरी भविष्य में करीब 82 लाख रुपये के संभावित फंड को कम कर सकती है। यही कारण है कि निवेश विशेषज्ञ हमेशा कहते हैं कि ₹सही समय का इंतजार मत कीजिए, समय को अपने पक्ष में कीजिए।

आखिर में रफ्तार पकड़ती है कंपाउंडिंग

एसआईपी का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि शुरुआती वर्षों में निवेश की रफ्तार धीमी लगती है, लेकिन बाद के वर्षों में वही निवेश तेजी से बढ़ने लगता है।
उदाहरण के तौर पर 5,000 रुपये की मासिक एसआईपी में

- 10 वर्ष बाद कुल निवेश लगभग 6 लाख रुपये होगा और फंड करीब 11.62 लाख रुपये बन सकता है।
- 20 वर्ष बाद कुल निवेश 12 लाख रुपये होगा, लेकिन फंड करीब 50 लाख रुपये तक पहुंच सकता है।
- 30 वर्ष पूरे होने पर कुल निवेश 18 लाख रुपये रहेगा, जबकि फंड बढ़कर लगभग 1.76 करोड़ रुपये हो जाएगा।
- यानी अंतिम दस वर्षों में केवल 6 लाख रुपये का अतिरिक्त निवेश पूरे फंड को 50 लाख रुपये से बढ़ाकर 1.76 करोड़ रुपये तक पहुंचा देता है। यही कंपाउंडिंग की असली ताकत है।

शुरुआत में देरी हो गई तो क्या करें?

यदि किसी कारणवश एसआईपी शुरू करने में देरी हो गई है तो भी नुकसान की भरपाई की जा सकती है।
विशेषज्ञों के अनुसार यदि आपने पहला साल गंवा दिया है तो शेष अवधि में अपनी मासिक एसआईपी थोड़ी बढ़ाकर इस अंतर को काफी हद तक पूरा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि आपकी योजना 5,000 रुपये मासिक एसआईपी की थी और एक साल की देरी हो गई, तो अगले 29 वर्षों तक लगभग 5,655 रुपये प्रति माह निवेश करके उस संभावित अंतर को काफी हद तक भरा जा सकता है। यानी हर महीने केवल 655 रुपये अतिरिक्त निवेश भविष्य में लाखों रुपये का अंतर पैदा कर सकता है।

छोटी एसआईपी भी बनेगी बड़ा फंड

- कई लोग सोचते हैं कि निवेश शुरू करने के लिए बड़ी रकम होना जरूरी है, जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है।
- वित्तीय सलाहकारों का कहना है कि यदि फिलहाल बड़ी राशि उपलब्ध नहीं है तो 500 रुपये, 1,000 रुपये या 2,000 रुपये से भी एसआईपी शुरू की जा सकती है। जैसे-जैसे आय बढ़े, वैसे-वैसे एसआईपी की राशि भी बढ़ाई जा सकती है।
- नियमित निवेश और लंबी अवधि का अनुशासन ही बड़ा कोष तैयार करने की सबसे प्रभावी रणनीति है।

समय ही सबसे बड़ा निवेश है

विशेषज्ञों का मानना है कि निवेश की दुनिया में सबसे मूल्यवान चीज पैसा नहीं, बल्कि समय है। बाजार में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे, लेकिन लंबे समय तक निवेश बनाए रखने वाले निवेशकों को कंपाउंडिंग का सबसे बड़ा लाभ मिलता है। यदि आप भविष्य में आर्थिक रूप से मजबूत बनना चाहते हैं तो निवेश की शुरुआत टालने के बजाय जितनी जल्दी संभव हो, उतनी जल्दी एसआईपी शुरू करें। छोटी-सी शुरुआत भी समय के साथ करोड़ों रुपये का फंड तैयार कर सकती है। इसलिए निवेश का सबसे अच्छा समय आज है, क्योंकि एक साल की देरी भविष्य में लाखों नहीं, बल्कि बड़े निवेशकों के लिए करोड़ों रुपये तक का अंतर पैदा कर सकती है।

पीपीएफ या म्यूचुअल फंड पर लें लोन?

- इमरजेंसी में कौन सा विकल्प है बेहतर
- अचानक पैसों की जरूरत पड़ने पर निवेश तोड़े बिना मिल सकती रकम
- दोनों विकल्पों के फायदे, नुकसान और किसके लिए कौन बेहतर

बिजनेस डेस्क

अचानक मेडिकल इमरजेंसी, बिजनेस में नकदी की जरूरत या किसी अन्य जरूरी खर्च के लिए अक्सर लोग अपने निवेश तोड़ देते हैं। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि लंबी अवधि के निवेश को समय से पहले भुनाने के बजाय उसके बदले लोन लेना कई बार अधिक फायदेमंद साबित होता है। पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) और म्यूचुअल फंड, दोनों पर लोन लेने की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन दोनों की शर्तें, ब्याज दरें और लोन की सीमा अलग-अलग हैं। ऐसे में जरूरत और निवेश के आधार पर सही विकल्प चुनना जरूरी है।
पीपीएफ पर लोनः कम ब्याज, लेकिन सीमित सुविधा
पीपीएफ पर लोन केवल एक निश्चित अवधि के दौरान ही लिया जा सकता है। खाता खुलने वाले वित्तीय वर्ष के तीसरे साल से लेकर छठे वित्तीय वर्ष तक ही यह सुविधा मिलती है। यदि पहले लिया गया लोन पूरी तरह चुका दिया गया हो, तभी अगला लोन लिया जा सकता है। लोन की अधिकतम राशि आवेदन से दो वित्तीय वर्ष पहले के खाते में उपलब्ध बैलेंस के केवल 25 प्रतिशत तक सीमित होती है। चूंकि पीपीएफ सरकार समर्थित बचत योजना है, इसलिए इस पर ब्याज भी कम लगता है। वर्तमान में पीपीएफ पर 7.1 प्रतिशत ब्याज मिलता है और लोन की ब्याज दर इससे केवल 1 प्रतिशत अधिक यानी लगभग 8.1 प्रतिशत है। उदाहरण के तौर पर यदि किसी निवेशक को चार लाख रुपये का लोन चाहिए तो उसके पीपीएफ खाते में लगभग 16 लाख रुपये का बैलेंस होना आवश्यक होगा, क्योंकि केवल 25 प्रतिशत राशि ही लोन के रूप में मिल सकती है।

म्यूचुअल फंड पर लोन : ज्यादा रकम और अधिक लचीलापन

म्यूचुअल फंड के बदले लोन निवेशकों के लिए अधिक लचीला विकल्प माना जाता है। यह सुविधा फिजिकल और डीमैट दोनों रूपों में रखी गई म्यूचुअल फंड यूनिट्स पर उपलब्ध है। इसका लाभ व्यक्तिगत निवेशकों के अलावा एचयूएफ, कंपनियां, एलएलपी, ट्रस्ट और साझेदारी फर्में भी ले सकती हैं। इक्विटी, डेट, हाइब्रिड और लिक्विड फंड सभी पर लोन मिल सकता है, हालांकि लोन की सीमा फंड के प्रकार पर निर्भर करती है। डेट और लिक्विड फंड पर आमतौर पर 70 से 80 प्रतिशत तक लोन मिल जाता है, जबकि इक्विटी फंड पर यह सीमा लगभग 50 प्रतिशत रहती है। यदि किसी निवेशक को चार लाख रुपये की जरूरत है तो करीब आठ लाख रुपये के म्यूचुअल फंड निवेश के आधार पर यह राशि मिल सकती है। सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक की यूनिट्स बिकती नहीं हैं और वे बाजार में निवेशित बनी रहती हैं, जिससे लंबी अवधि में संपत्ति निर्माण जारी रहता है।

ब्याज और जोखिम में बड़ा अंतर

म्यूचुअल फंड पर लोन की ब्याज दर आमतौर पर 9 से 12 प्रतिशत के बीच होती है। कई बैंक और वित्तीय संस्थान इसे ओवरड्राफ्ट सुविधा के रूप में देते हैं, जिसमें केवल इस्तेमाल की गई राशि पर ही ब्याज देना पड़ता है। हालांकि इसमें एक जोखिम भी है। यदि बाजार गिरता है और म्यूचुअल फंड की नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) कम हो जाती है, तो बैंक अतिरिक्त सिक्योरिटी या आंशिक भुगतान की मांग कर सकता है। ऐसा नहीं करने पर गिरवी रखी गई यूनिट्स बेची भी जा सकती हैं।

किसके लिए कौन सा विकल्प बेहतर

वेतनभोगी कर्मचारियों के लिए, जो नियमित एसआईपी करते हैं और अच्छा म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो बना चुके हैं, म्यूचुअल फंड पर लोन बेहतर विकल्प माना जाता है। इससे निवेश टूटता नहीं और कंपाउंडिंग का लाभ भी जारी रहता है। स्वरोजगार या व्यवसाय करने वालों के लिए भी म्यूचुअल फंड पर लोन अधिक उपयोगी है, क्योंकि इसमें बड़ी राशि अपेक्षाकृत जल्दी मिल सकती है।

एसआईएफ की बढ़ती लोकप्रियता से लंपसम निवेश को मिल रही है चुनौती

10 लाख की न्यूनतम निवेश सीमा के बावजूद एसआईएफ की ओर बढ़ा रुझान

जानकारी
बिजनेस डेस्क

विशेषज्ञों का कहना है कि पहले लॉन्ग-शॉर्ट निवेश रणनीति का लाभ केवल कैटेगरी-III अल्टरनेटिव इन्वेस्टमेंट फंड (एआईएफ) के माध्यम से ही मिल पाता था। लेकिन एआईएफ में निवेश की न्यूनतम सीमा एक करोड़ रुपये होती है, जो अधिकांश निवेशकों की पहुंच से बाहर है। इसके विपरीत एसआईएफ में केवल 10 लाख रुपये से निवेश संभव है। इससे संपन्न निवेशकों को कम पूंजी में वही निवेश रणनीति अपनाने का अवसर मिल रहा है। यही कारण है कि बड़ी संख्या में एचएनआई निवेशक अब एसआईएफ को अपनाने लगे हैं।

म्यूचुअल फंड उद्योग में लंपसम निवेशकों के लिए एक नया विकल्प तेजी से उभर रहा है। स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) की बढ़ती लोकप्रियता अब पारंपरिक इक्विटी म्यूचुअल फंडों के लंपसम निवेश को चुनौती देती दिखाई दे रही है। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि हाल के महीनों में इक्विटी म्यूचुअल फंडों में लंपसम निवेश घटने के पीछे एसआईएफ की बढ़ती स्वीकार्यता भी एक अहम वजह हो सकती है। पिछले महीने इक्विटी म्यूचुअल फंडों में शुद्ध निवेश (नेट इनफ्लो) में करीब 40 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई, जबकि दूसरी ओर एसआईपी (एसआईपी) निवेश लगातार मजबूत बना रहा। इससे यह संकेत मिला कि छोटे निवेशक नियमित निवेश जारी रखे हुए हैं, जबकि बड़े निवेशक अब नए विकल्पों की तलाश कर रहे हैं।

सात माह में सात गुना बढ़ा एयूएम

पिछले वर्ष शुरू किए गए स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड्स ने बेहद कम समय में निवेशकों का भरोसा जीत लिया है। अक्टूबर 2025 में इनका एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) लगभग 2,010 करोड़ रुपये था, जो मई 2026 तक बढ़कर 13,814 करोड़ रुपये के करीब पहुंच गया। यानी महज सात महीनों में इनका आकार लगभग सात गुना बढ़ गया। हालांकि एसआईएफ में निवेश के लिए न्यूनतम 10 लाख रुपये की सीमा तय की गई है, फिर भी हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल (एचएनआई) निवेशकों में इसका आकर्षण लगातार बढ़ रहा है।

हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम पसंद

एसआईएफ के भीतर सबसे अधिक लोकप्रियता हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम को मिली है। मई 2026 तक इस श्रेणी में करीब 9,709 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो कुल एसआईएफ एसेट्स का लगभग 70 प्रतिशत है। इन योजनाओं में प्रति फोलियो औसत निवेश भी सबसे अधिक रहा। हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में औसत निवेश करीब 33.86 लाख रुपये प्रति फोलियो दर्ज किया गया। इसके मुकाबले इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में यह आंकड़ा 15.64 लाख रुपये और इक्विटी एक्स-टॉप-100 लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में 12.77 लाख रुपये रहा। विशेषज्ञों का कहना है कि यह आंकड़ा बताता है कि संपन्न निवेशक इस नई श्रेणी पर तेजी से भरोसा जता रहे हैं।

क्यों बढ़ रही है एसआईएफ मांग

बाजार जानकारों के अनुसार एसआईएफ की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह निवेशकों को बेहतर जोखिम-समायोजित रिटर्न देने की कोशिश करता है। विशेष रूप से हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट रणनीति बाजार में गिरावट के दौरान भी नुकसान को सीमित रखने का प्रयास करती है। हालिया बाजार सुधार के दौरान इन योजनाओं ने सकारात्मक रिटर्न देकर निवेशकों का भरोसा और मजबूत किया है। यही वजह है कि कई निवेशक अब पारंपरिक लंपसम इक्विटी निवेश की जगह एसआईएफ को प्राथमिकता दे रहे हैं।

म्यूचुअल फंडों पर पड़ेगा असर?

विशेषज्ञों का मानना है कि अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि एसआईएफ पारंपरिक म्यूचुअल फंडों का स्थान ले लेंगे। फिलहाल इसका प्रभाव मुख्य रूप से बड़े लंपसम निवेशकों तक सीमित है। एसआईपी निवेश में किसी प्रकार की कमजोरी देखने को नहीं मिली है। इससे स्पष्ट है कि खुदरा निवेशक अभी भी नियमित निवेश के लिए पारंपरिक म्यूचुअल फंडों पर भरोसा बनाए हुए हैं। हालांकि यदि एसआईएफ का प्रदर्शन लगातार बेहतर रहता है तो आने वाले वर्षों में बड़े निवेशकों का एक हिस्सा इस श्रेणी की ओर शिफ्ट हो सकता है।

किन निवेशकों के लिए बेहतर है एसआईएफ

विशेषज्ञों के अनुसार एसआईएफ उन निवेशकों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिनके पास पहले से बड़ा निवेश पोर्टफोलियो है और जो बाजार की अस्थिरता के बीच बेहतर जोखिम प्रबंधन चाहते हैं। विशेष रूप से ऐसे निवेशक जो एकमुश्त बड़ी राशि निवेश करते हैं और केवल इक्विटी पर निर्भर नहीं रहना चाहते, उनके लिए यह एक बेहतर विकल्प बन सकता है। इसके अलावा फिक्स्ड इनकम निवेशक, जो सीमित जोखिम के साथ अपेक्षाकृत बेहतर रिटर्न चाहते हैं, वे भी भविष्य में इस श्रेणी की ओर आकर्षित हो सकते हैं।

अभी भी कई चुनौतियां बाकी

हालांकि विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि एसआईएफ को व्यापक स्तर पर लोकप्रिय होने में अभी समय लगेगा। निवेशकों में जागरूकता बढ़ाने, वितरकों को प्रशिक्षित करने और लंबी अवधि का प्रदर्शन रिकॉर्ड तैयार होने के बाद ही यह श्रेणी बड़े पैमाने पर स्वीकार की जाएगी। निवेशकों के लिए यह भी जरूरी होगा कि वे केवल शुरुआती प्रदर्शन देखकर निवेश न करें, बल्कि फंड की रणनीति, जोखिम, शुल्क और अपने वित्तीय लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लें।

लंबी अवधि में बदल सकता है निवेश का परिदृश्य

वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय निवेश उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है। जैसे-जैसे निवेशकों की समझ बढ़ेगी, वे पारंपरिक इक्विटी और डेट फंडों से आगे बढ़कर नई निवेश रणनीतियों को भी अपनाएंगे। स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड इसी बदलाव का संकेत हैं। यदि इनका प्रदर्शन स्थिर और बेहतर बना रहता है तो आने वाले वर्षों में यह हाई नेटवर्थ निवेशकों के पोर्टफोलियो का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकते हैं। हालांकि खुदरा निवेशकों के लिए एसआईपी आधारित म्यूचुअल फंड अभी भी सबसे सरल, अनुशासित और प्रभावी निवेश विकल्प बने हुए हैं।

20 साल की एसआईपी में सिर्फ पांच फंड ही बने असली 'वेल्थ क्रिएटर'

बिजनेस डेस्क। म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले अधिकांश निवेशकों का सपना होता है कि उन्हें लंबे समय तक लगातार बेहतर रिटर्न मिले। हालांकि, ऐसा करने वाले फंड बहुत कम हैं। करीब 600 सक्रिय इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के विश्लेषण में केवल पांच ऐसी योजनाएं सामने आई हैं, जिन्होंने 3, 5, 10, 15 और 20 वर्ष जैसी सभी प्रमुख निवेश अवधियों में 15 प्रतिशत से अधिक सालाना एसआईपी रिटर्न दिया है। यह विश्लेषण वैल्यू रिसर्च के 29 जून 2026 तक के आंकड़ों पर आधारित है। सबसे खास बात यह है कि इस सूची में कोई भी फ्लेक्सी-कैप या लार्जकैप फंड शामिल नहीं है। दो मिडकैप, दो हेल्थकेयर और एक इंफ्रास्ट्रक्चर थीम आधारित फंड ने निवेशकों को लंबी अवधि में शानदार संपत्ति बनाने का अवसर दिया। यह दर्शाता है कि मजबूत सेक्टरों में लंबे समय तक धैर्य के साथ निवेश करने वाले निवेशकों को बेहतरीन रिटर्न मिला।

ये हैं पांच सबसे सफल एसआईपी फंड

- इस सूची में एचएसबीसी मिडकैप फंड (रेगूलर) पहले स्थान पर है। इस फंड ने 3 वर्ष में 20.05%, 5 वर्ष में 21.46%, 10 वर्ष में 18.39%, 15 वर्ष में 18.96% और 20 वर्ष में 17.70% का वार्षिक एसआईपी रिटर्न दिया। निवेशक ने 20 वर्षों तक हर महीने 10,000 की एसआईपी की होती, तो उसका निवेश बढ़कर 1.86 करोड़ हो जाता।
- दूसरे स्थान पर एसबीआई हेल्थकेयर ऑपर्च्युनिटी फंड (रेगूलर) रहा। इसने 20 वर्षों में 16.80 प्रतिशत वार्षिक एसआईपी रिटर्न दिया और 10,000 मासिक निवेश को लगभग 1.68 करोड़ रुपये में बदल दिया।
- तीसरे स्थान पर आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल मिडकैप फंड रहा। इस फंड ने 20 वर्षों में 16.52 प्रतिशत का रिटर्न दिया और लगभग 1.61 करोड़ का कोष तैयार किया।
- चौथे स्थान पर यूटीआई हेल्थकेयर म्यूचुअल फंड (रेगूलर) रहा, जिसने 20 वर्षों में 15.61 प्रतिशत रिटर्न देते हुए 10,000 की मासिक एसआईपी को लगभग 1.45 करोड़ रुपये तक पहुंचाया।
- पांचवें स्थान पर डीएसपी इंडिया टीआईजीईआर फंड (रेगूलर) रहा। इंफ्रास्ट्रक्चर थीम पर आधारित इस फंड ने 20 वर्षों में 15.40 प्रतिशत रिटर्न दिया और निवेशकों का कोष करीब 1.40 करोड़ रुपये तक पहुंचा दिया।

अमेरिकी ब्याज दरों, ट्रेजरी यील्ड और वैश्विक अनिश्चितता से बढ़ा दबाव

सात माह के निचले स्तर पर सोना-चांदी, ऐसे में क्या करें निवेशक

बिजनेस डेस्क

जुलाई की शुरुआत सर्राफा बाजार के लिए झटके भरी रही। 1 जुलाई को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में सोने और चांदी की कीमतों में बड़ी गिरावट दर्ज की गई। अमेरिकी ट्रेजरी यील्ड में तेजी, फेडरल रिजर्व की सख्त मौद्रिक नीति के संकेत और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं ने निवेशकों की धारणा को प्रभावित किया। इसका असर यह हुआ कि सोना और चांदी दोनों सात महीने के निचले स्तर के करीब पहुंच गए। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि यह गिरावट केवल नकारात्मक संकेत नहीं है, बल्कि लंबी अवधि के निवेशकों के लिए अवसर भी बन सकती है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर अगस्त डिलीवरी वाला सोना 1,701 रुपये यानी 1.19 प्रतिशत टूटकर करीब 1.40 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। वहीं सितंबर डिलीवरी वाली चांदी में और बड़ी गिरावट देखने को मिली। चांदी 5,380 रुपये यानी 2.35 प्रतिशत लुढ़ककर 2.23 लाख रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर आ गई।
अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी कमजोरी का यही रुख दिखाई दिया। कॉमेक्स पर सोना करीब 4,000 डॉलर प्रति औंस के महत्वपूर्ण स्तर के आसपास सात महीने के निचले स्तर पर कारोबार करता रहा, जबकि चांदी लगभग तीन प्रतिशत गिरकर 57.73 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गई।

अमेरिकी फेड की सख्ती बनी सबसे बड़ी वजह

बाजार विशेषज्ञों के अनुसार इस गिरावट की सबसे बड़ी वजह अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व का सख्त रुख है। हाल के दिनों में फेड अधिकारियों ने संकेत दिए हैं कि यदि महंगाई पूरी तरह नियंत्रण में नहीं आती है तो इस वर्ष के अंत तक ब्याज दरों में एक और बढ़ोतरी की जा सकती है। ब्याज दरें बढ़ने से निवेशकों का रुझान सोने जैसी बिना ब्याज वाली परिसंपत्तियों से हटकर बॉन्ड और अन्य ब्याज देने वाले निवेश विकल्पों की ओर बढ़ जाता है। यही कारण है कि सोने और चांदी पर बिकवाली का दबाव लगातार बना हुआ है।

ट्रेजरी यील्ड और मजबूत डॉलर का असर

अमेरिकी सरकारी बॉन्ड यानी ट्रेजरी की यील्ड में तेजी ने भी सोने की चमक फीकी कर दी है। जब ट्रेजरी यील्ड बढ़ती है तो निवेशकों को सुरक्षित और बेहतर रिटर्न वाले विकल्प मिलने लगते हैं। इससे सोने की मांग घटती है। इसके साथ ही डॉलर इंडेक्स में मजबूती आने से भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने और चांदी की कीमतों पर दबाव बढ़ा। चूंकि सोने का कारोबार डॉलर में होता है, इसलिए डॉलर मजबूत होने पर अन्य देशों के निवेशकों के लिए सोना महंगा हो जाता है और मांग कमजोर पड़ जाती है।

मध्य-पूर्व में बढ़ता तनाव भी चिंता का कारण

मध्य-पूर्व में एक बार फिर बढ़ते तनाव ने बाजार की चिंता बढ़ा दी है। ईरान और अमेरिका के बीच रिश्तों में आई तल्खी तथा शांति वार्ता को लेकर अनिश्चितता ने निवेशकों को सतर्क बना दिया है। हालांकि सामान्य परिस्थितियों में ऐसे तनाव के दौरान सोने को सुरक्षित निवेश माना जाता है, लेकिन इस समय ब्याज दरों और डॉलर की मजबूती का प्रभाव अधिक देखने को मिल रहा है। इसके अलावा कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव ने भी वैश्विक महंगाई को लेकर नई चिंताएं पैदा कर दी हैं। यदि तेल महंगा होता है तो महंगाई बढ़ सकती है, जिससे केंद्रीय बैंक ब्याज दरें लंबे समय तक ऊंची रख सकते हैं।

अब अमेरिकी आंकड़ों पर टिकी नजर

बाजार की अगली दिशा काफी हद तक अमेरिका से आने वाले आर्थिक आंकड़ों पर निर्भर करेगी। निवेशकों की नजर जून के **ADP** रोजगार आंकड़ों और नॉन-फार्म पेरोल डेटा पर है। यदि रोजगार के आंकड़े मजबूत आते हैं तो फेड के लिए ब्याज दरें ऊंची बनाए रखने का आधार मजबूत होगा, जिससे सोने पर दबाव बना रह सकता है। वहीं, यदि आंकड़े उम्मीद से कमजोर आते हैं तो ब्याज दरों में नरमी की उम्मीद बढ़ेगी और सोना-चांदी में रिकवरी देखने को मिल सकती है।

विशेषज्ञ बोले- जल्दबाजी नहीं, रणनीति के साथ ही करें निवेश

विशेषज्ञों की रायः अभी सतर्कता जरूरी

सर्राफा बाजार के जानकारों का कहना है कि फिलहाल तकनीकी रूप से सोना और चांदी दोनों कमजोर स्थिति में हैं। विशेषज्ञों के अनुसार यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना 4,000 डॉलर प्रति औंस के स्तर से नीचे बना रहता है तो अगला मजबूत सपोर्ट 3,600 डॉलर प्रति औंस के आसपास दिखाई देता है। इसी तरह चांदी यदि 60 डॉलर प्रति औंस के नीचे टिकती है तो इसमें 50 डॉलर प्रति औंस तक गिरावट की संभावना बनी रह सकती है। हालांकि लगातार बिकवाली के कारण दोनों धातुएं अब ओवरसोल्ड जोन में पहुंच चुकी हैं। ऐसे में किसी भी सकारात्मक वैश्विक संकेत या कमजोर अमेरिकी आर्थिक आंकड़ों के बाद तेज तकनीकी रिकवरी भी संभव है।

क्या यह खरीदारी का सही समय है?

विशेषज्ञों का मानना है कि लंबी अवधि के निवेशकों को घबराने की जरूरत नहीं है। यदि किसी का निवेश लक्ष्य पांच से दस वर्ष या उससे अधिक का है तो ऐसी गिरावट चरणबद्ध निवेश (स्टैगर्ड इन्वेस्टमेंट) का अवसर बन सकती है। एकमुश्त निवेश करने के बजाय किस्तों में खरीदारी करना अधिक सुरक्षित रणनीति मानी जा रही है। इससे यदि कीमतें और गिरती हैं तो औसत खरीद मूल्य कम किया जा सकता है। वहीं अल्पकालिक ट्रेडर्स को फेडरल रिजर्व के अगले संकेत, अमेरिकी बॉन्ड यील्ड, डॉलर इंडेक्स और वैश्विक घटनाक्रमों पर लगातार नजर बनाए रखनी चाहिए।

दीर्घकाल में बनी रहेगी सोने की अहमियत

सोना सदियों से महंगाई, आर्थिक संकट और वैश्विक अनिश्चितताओं के दौरान सबसे भरोसेमंद निवेश विकल्प माना जाता रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि अल्पकाल में कीमतों में उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है, लेकिन लंबी अवधि में सोना निवेश पोर्टफोलियो को स्थिरता देने का महत्वपूर्ण माध्यम बना रहेगा। यही कारण है कि वित्तीय सलाहकार कुल निवेश का एक हिस्सा सोना और चांदी जैसी कीमती धातुओं में रखने की सलाह देते हैं। मौजूदा गिरावट को केवल कमजोरी के रूप में नहीं, बल्कि रणनीतिक निवेश के अवसर के रूप में भी देखा जा सकता है। हालांकि किसी भी निवेश निर्णय से पहले अपनी जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और वित्तीय सलाहकार की राय को जरूर ध्यान में रखना चाहिए।

खबर संक्षेप

अग्रवाल वैश्य समाज का संगठन संवाद कार्यक्रम आज

सोनीपत। अग्रवाल वैश्य समाज की ओर से संगठनात्मक मजबूती और पदाधिकारियों के मार्गदर्शन के उद्देश्य से रविवार को कुंडली स्थित श्री अग्रसेन धाम में संगठन संवाद कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। समाज के जिला मीडिया प्रभारी प्रवीण गोयल ने बताया कि प्रदेशाध्यक्ष अशोक बुवानीवाला के नेतृत्व में होने वाले इस कार्यक्रम में पानीपत, सोनीपत और रोहतक के पदाधिकारी, जिला कार्यकारिणी सदस्य, युवा एवं महिला विंग के प्रतिनिधि तथा समाज के गणमान्य लोग भाग लेंगे। जिला उपाध्यक्ष प्रदीप गोयल ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य पदाधिकारियों को उनकी जिम्मेदारियों, संगठन की कार्यप्रणाली और समाज के प्रति दायित्वों से अवगत कराना है।

लोक नृत्य के संवर्धन पर परिसंवाद कार्यक्रम 7 को

गोहाना। धर्मपुत्र कला मंच, गोहाना द्वारा भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की गुरु-शिष्य परम्परा के अंतर्गत 7 जुलाई को गांव बुटाना स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में हरियाणवी लोक नृत्यों के संरक्षण एवं संवर्धन विषय पर परिसंवाद एवं कार्यशाला का आयोजन होगा। यह कार्यक्रम विद्यालय के प्राचार्य कृष्ण कुमार की अध्यक्षता में आयोजित होगा। कार्यक्रम की संयोजक संस्कृत प्रवक्ता डॉ. सरिता देवी एवं मोनिका मोर होंगी। कार्यक्रम के आयोजक धर्मपुत्र कला मंच, गोहाना के अध्यक्ष मनोज जाले होंगे।

72 गांवों में एक साथ मानसून अभिनंदन उत्सव मनाया

पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व

केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल ने हर व्यक्ति से 20 पौधे लगाने की अपील की

हरिभूमि न्यूज ›› सोनीपत

सोनीपत। पौधरोपण करते ओएसडी साथ में गणमान्य लोग। *फोटो : हरिभूमि*

मानसून के आगमन पर शनिवार को हरियाणा के 72 गांवों में एक साथ मानसून अभिनंदन उत्सव मनाया गया। मुख्य कार्यक्रम बढ़खालसा कॉम्प्लेक्स में आयोजित हुआ, जहां से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी 72 गांवों को जोड़ा गया। इस दौरान जल संरक्षण, पौधरोपण, स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण को लेकर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। सभी गांवों में एक ही समय पर पौधरोपण किया गया और ग्रामीण अपने-अपने गांवों, खेतों तथा सार्वजनिक स्थलों से ऑनलाइन जुड़कर अभियान का हिस्सा बने।

कार्यक्रम को केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संबोधित किया, जबकि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के ओएसडी वीरेंद्र बढ़खालसा मुख्य कार्यक्रम में मौजूद रहे। मनोहर लाल ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का दायित्व है। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति से अपने जीवनकाल में कम से कम 20 पौधे लगाने और उनकी देखभाल करने का संकल्प लेने की अपील की। उन्होंने कहा कि यदि प्रत्येक नागरिक इस जिम्मेदारी को निभाए तो आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण सुनिश्चित किया जा सकता है।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर बलिदानी दादा कुशाल सिंह दहिया पर्यावरण संरक्षण समिति के अध्यक्ष वीर सिंह दहिया, दहिया खाप के प्रधान सुरेंद्र दहिया, दहिया खाप चौबीसी के प्रधान उमेश दहिया, प्रवीण वर्मा, हेमंत नांदल सहित बड़ी संख्या में सामाजिक प्रतिनिधि, ग्रामीण और पर्यावरण प्रेमी मौजूद रहे।

उन्होंने अमर शहीद दादा कुशाल सिंह दहिया को श्रद्धांजलि अर्पित करते बलिदानी दादा कुशाल सिंह दहिया पर्यावरण संरक्षण समिति की पहल की सराहना भी की।

ओएसडी वीरेंद्र बढ़खालसा ने बताया कि अभियान की शुरुआत केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल के 72वें जन्मदिन पर 5 जून से की गई थी। उन्होंने कहा कि इस मुहिम का उद्देश्य अधिक से अधिक पौधरोपण, जल संरक्षण एवं संवर्धन, सुरक्षित अन्न उत्पादन तथा प्लास्टिक के उपयोग में कमी लाना है। कार्यक्रम में प्रसिद्ध गायक एम.डी. और बिंदर दनोदा ने प्रस्तुति दी। ट्री मैन देवेंद्र सूरा ने पौधों की देखभाल का संदेश दिया।

त्रिवेणी लगा पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश, पौधरोपण की अपील

- भंडारे और पौधरोपण कार्यक्रम में रेवली पहुंचे विधायक निखिल मदान

हरिभूमि न्यूज ›› सोनीपत

सोनीपत। पौधरोपण करते हुए विधायक निखिल मदान साथ में अन्य।

रेवली गांव में बाबा कलीनाथ कुश्ती अखाड़ा समिति की ओर से आयोजित भंडारे और पौधारोपण कार्यक्रम में विधायक निखिल मदान ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। कार्यक्रम गांव के ऑक्सीजन बाग में आयोजित किया गया, जहां विधायक ने त्रिवेणी के रूप में बरगद, पीपल और नीम के पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। विधायक निखिल मदान ने कहा कि बढ़ते औद्योगीकरण के कारण हरियाली लगातार कम हो रही है, जिससे प्रदूषण की समस्या भी बढ़ रही है। ऐसे में प्रत्येक नागरिक को अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनकी देखभाल करने का संकल्प लेना चाहिए। उन्होंने लोगों से /"एक पेड़ मां के नाम/" अभियान से जुड़ने और पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भागीदारी निभाने की अपील की। इसके बाद विधायक ने भंडारे में शामिल होकर प्रसाद ग्रहण किया तथा आयोजन के लिए बाबा श्री कलीनाथ जी कुश्ती अखाड़ा समिति के पदाधिकारियों और ग्रामीणों को शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में ईश कुमार, अश्वनी, सत्यपाल दहिया, कप्तान दहिया, सुरेश अंतिल आदि मौजूद रहे।

पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए खुर्मपुर और खांडा में किया पौधरोपण

- पर्यावरण को संरक्षित रखने के लिए ग्रामीणों को जागरूक किया जा रहा : नरेंद्र दहिया

हरिभूमि न्यूज ›› खरखौदा

खरखौदा। खांडा गांव में पौधरोपण करते सरपंच व ग्रामीण।

खुर्मपुर व खांडा गांव में सरपंचों व ग्रामीणों के सहयोग से पौधारोपण किया गया। खांडा गांव में सरपंच बिजेन्द्र के नेतृत्व में 30 पौधे रोपित किए गए। जिसमें कृष्ण दहिया, जय भगवान, हजारी, सतपाल, हरिओम, मुकेश, मोहन, सोमबीर आदि ने पौधारोपण में सक्रिय भागीदारी निभाई। वहीं खुर्मपर गांव में पूर्व सरपंच नरेंद्र दहिया, सरपंच प्रहलाद सिंह, नपा पार्षद अनूप ठेकेदार, खंड कार्यक्रम अधिकारी सुंदर सुहाग, पंचायत सदस्य मीना देवी, रामलाल, अमन कुमार, बसंत कुमार व रणदीप द्वारा 50 पौधे रोपित किए गए। नरेंद्र दहिया ने बताया कि पर्यावरण को संरक्षित रखने के लिए ग्रामीणों को जागरूक किया जा रहा है। इसी जागरूकता के कारण अब ग्रामीण पौधारोपण कार्यक्रम में पूरा सहयोग दे रहे हैं। यह पौधारोपण कार्यक्रम लगातार जारी रहेगा।

समाज में समानता, भाईचारे और कबीर के आदर्शों को अपनाएं : दहिया

खरखौदा। संत कबीर के चित्र पर पुष्प अर्पित करते संजीव व अन्य। *फोटो : हरिभूमि*

खरखौदा। संत शिरोमणि कबीर समाज सेवा समिति के तत्वावधान में खरखौदा में संत कबीर जयंती का आयोजन किया गया। समिति के सचिव शिव कुमार नंबरदार ने बताया कि यह आयोजन पहले 29 जून को होना था, लेकिन अपरिहार्य कारणों के चलते स्थगित कर दिया गया था। जबकि अब कार्यक्रम में कांग्रेस के जिलाध्यक्ष संजीव दहिया ने मुख्य अतिथि और ब्लॉक अध्यक्ष सुनील पार्षद ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर शिरकत की और समाज में समानता,भाईचारे और कबीर के आदर्शों को अपनाने का संदेश दिया। समिति के पदाधिकारियों ने मुख्य अतिथि और अन्य का फूल मालाओं से स्वागत किया। संत कबीर समाज सेवा समिति के पदाधिकारियों ने सभी आगंतुकों का आभार जताया। बलबीर प्रधान बारह खांडा, पूर्व सरपंच राधेश्याम, रमेश कुमार फौजी, सतीश प्रधान रोहट, कोषाध्यक्ष गणेश उर्फ उमेश, फूलकंवार बवाना, सुनहरे आदि मौजूद रहे।

सभी कार्यकर्ताओं से कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया

- भाजपा की संगठनात्मक बैठक में मासिक बैठकों पर चर्चा

हरिभूमि न्यूज ›› गन्नौर

गन्नौर। प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य आजाद सिंह नेहरा व भाजपा नेता देवेंद्र कौशिक का स्वागत करते पार्टी पदाधिकारी। *फोटो :हरिभूमि*

जीटी रोड ऋषिका सिटी स्थित भाजपा कार्यालय में गन्नौर विधानसभा की संगठनात्मक बैठक शनिवार को आयोजित हुई। बैठक में भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य आजाद सिंह नेहरा व भाजपा नेता देवेंद्र कौशिक ने शिरकत की। विभिन्न गांवों के सरपंचों ने भी बैठक में भाग लिया। उन्होंने कार्यकर्ताओं को संगठन की मजबूती और आगामी कार्यक्रमों को लेकर दिशा-निर्देश दिए। राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन द्वारा तय मंडलों की मासिक बैठकों के कार्यक्रम की जानकारी देते सभी कार्यकर्ताओं से सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया। बैठक का संचालन पूर्व वाइस चेयरमैन भूषण हसिजा ने किया। बैठक में प्रदेश प्रवक्ता राजकुमार कटारिया, मार्केट कमेटी चेयरमैन निशांत छौक्कर, मंडल अध्यक्ष संजय गौतम और मार्केट कमेटी वाइस चेयरमैन योगेश कौशिक सहित अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सोनीपत। बैठक के दौरान मौजूद आम आदमी पार्टी के पदाधिकारी एवं सदस्यगण।

आप ने विमल को सौंपी एंटी करप्शन विंग की जिम्मेदारी

सोनीपत। आम आदमी पार्टी की बैठक शनिवार को मुरथल स्थित रॉयल ढाबा में प्रदेश अध्यक्ष सुशील गुप्ता और प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेंद्र अहलावत की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में संगठन विस्तार को लेकर कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। सर्वसम्मति से पार्टी के वरिष्ठ नेता विमल किशोर को आम आदमी पार्टी की एंटी करप्शन विंग का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया। वहीं जिला अध्यक्ष रणबीर छिक्कारा को राष्ट्रीय परिषद का सदस्य बनाया गया। नियुक्ति के बाद विमल किशोर ने प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश उपाध्यक्ष और पार्टी के शीर्ष नेतृत्व का आभार जताया। कहा कि वह नई जिम्मेदारी का पूरी ईमानदारी और निष्ठा से निर्वहन करेंगे। साथ ही प्रदेशभर में एंटी करप्शन विंग का मजबूत संगठन खड़ा किया जाएगा, ताकि कथित भ्रष्टाचार से प्रभावित लोगों की मदद की जा सके और भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रभावी ढंग से आवाज उठाई जा सके। बैठक में कैथल जिला अध्यक्ष जगमग मटोर, जिला सचिव विकास दहिया, बबीता, रामबीर, विधानसभा अध्यक्ष योगेश पाल, शेर मोहम्मद, सिद्धार्थ रोहिल्ला, सुनील दहिया, सरोज बाला राठी, रोहित, ईश्वर दहिया, सूरजभान, जयपाल सिंहमार, मीनू, सत्तार अहमद, आमीन, नरेश कौशिक, जगदीश कौशिक, अजय टांक, नवीन मेहरा, राहुल, कर्मबीर सहित बड़ी संख्या में पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

न्यूज डायरी

विद्यार्थियों ने सीखी वैश्विक डिजिटल समझ

सोनीपत। ऋषिकुल विद्यापीठ अलीपुर के समन्वय में ऋषिकुल वर्ल्ड एकेडमी में रिकग्निशन ऑफ इंटरनेशनल डाइमेंशन इन स्कूल (आरआईडीएस) कार्यक्रम के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय डिजिटल जागरूकता – लर्निंग स्मार्ट इन अ कनेक्टेड वर्ल्ड विषय पर विशेष क्रियात्मक गतिविधि आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को वैश्विक दृष्टिकोण प्रदान करना तथा विभिन्न देशों की शिक्षा, संस्कृति, तकनीक और डिजिटल जीवनशैली से परिचित कराना था। गतिविधि के दौरान विद्यार्थियों ने डिजिटल माध्यम से विभिन्न देशों के छात्रों से संवाद स्थापित किया। उन्होंने शिक्षा प्रणाली, संस्कृति, परंपराओं, डिजिटल सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से जुड़ी जानकारी एकत्रित की। इसके आधार पर विद्यार्थियों ने पोस्टर, चार्ट और प्रस्तुतीकरण तैयार कर एक-दूसरे के साथ साझा किए।

प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण जरूरी

खरखौदा। सावित्रीबाई फुले राजकीय कन्या महाविद्यालय, खरखौदा में वृक्षारोपण सप्ताह के तहत पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह आयोजन महाविद्यालय के इको क्लब द्वारा किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और परिसर को हरा-भरा बनाना है। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य प्रोफेसर अनिल कुमार ने की। उन्होंने पर्यावरण की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण बेहद जरूरी है। संस्थागत स्तर पर ऐसे प्रयास पर्यावरण सुधार में बड़ी भूमिका निभाते हैं। इको क्लब के प्रभारी डॉ. विजयदीप ने कार्यक्रम का नेतृत्व करते हुए बताया कि इस विशेष सप्ताह के अंतर्गत कॉलेज परिसर में विभिन्न प्रकार के औषधीय, छायादार और फलदार पौधे लगाए जा रहे हैं।

पारिवारिक विवाद की सुनवाई के लिए तिथि निर्धारित की

सोनीपत। पुलिस आयुक्त ममता सिंह और पुलिस उपायुक्त अपराध एवं पश्चिमी जोन नरेंद्र कादियान के मार्गदर्शन में गठित सीएलजी (कम्युनिटी लाइजन ग्रुप) कमेटी की साप्ताहिक बैठक शनिवार को आयोजित हुई। बैठक में भटगांव निवासी कृष्ण की ओर से दिए गए पारिवारिक विवाद से जुड़े मामले पर सुनवाई की गई। शिकायतकर्ता के नशामुक्ति केंद्र में होने के कारण वह बैठक में उपस्थित नहीं हो सका, जबकि परिवार के सदस्य कमेटी के समक्ष पहुंचे। दोनों पक्षों में आपसी सहमति से समाधान का प्रयास करते कमेटी ने शिकायतकर्ता को अगले शनिवार बुलाने का निर्णय लिया और अगली सुनवाई के लिए 11 जुलाई की तिथि निर्धारित की।

नागरिक अस्पताल में मरीज चर्म रोग संबंधी सेवाओं से वंचित, एसएमओ ने ली वीआरएस

- अस्पताल में चर्म रोग विशेषज्ञ की नहीं की जा रही स्थायी नियुक्त, डॉ. राजेश सप्ताह में दो दिन दे रहे थे अपनी सेवाएं
- मरीजों को अब निजी अस्पतालों, क्लीनिकों में चर्म रोग संबंधी चिकित्सकों से करवाना पड़ रहा इलाज, वहन कर रहे आर्थिक खर्च

हरिभूमि न्यूज ›› सोनीपत

सोनीपत। सोनीपत के नागरिक अस्पताल में इलाज के लिए आए मरीज व उनके परिजन।

दिल्ली रोड स्थित नागरिक अस्पताल में अब मरीजों को चर्म रोग संबंधी सेवाओं के लाभ से वंचित रहना पड़ेगा। अस्पताल में अपनी सेवाएं देते आ रहे वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी एवं चर्म रोग विशेषज्ञ डॉ. राजेश सिंघल ने वीरवार को स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति (वीआरएस) ले ली है। उनके बाद नागरिक अस्पताल में अब तक किसी अन्य चर्म रोग विशेषज्ञ की नियुक्ति नहीं हो पाई है। ऐसे में अस्पताल में इलाज के लिए आने वाले चर्म रोग संबंधी मरीज इलाज नहीं मिलने से वापस लौट रहे हैं। मरीजों को अब निजी अस्पतालों, क्लीनिकों में चर्म रोग संबंधी चिकित्सकों से इलाज करवाना पड़ रहा है। इसके लिए उन्हें आर्थिक खर्च भी वहन करना पड़ रहा है। मरीजों की मांग है कि अस्पताल में जल्द स्थायी चर्म रोग विशेषज्ञ की नियुक्ति की जाए।

क्विज में जुपिटर और सैटर्न हाउस अव्वल

खरखौदा। केडी इंटरनेशनल स्कूल में विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास, सामान्य ज्ञान एवं त्वरित निर्णय क्षमता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता को दो समूहों में विभाजित किया गया। प्रथम समूह में कक्षा 1 से 5 तथा द्वितीय समूह में कक्षा 6 से 12 के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के दौरान सभी प्रतिभागियों ने विभिन्न विषयों से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देकर अपनी प्रतिभा, ज्ञान एवं आत्मविश्वास का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में कक्षा 1 से 5 वर्ग में जुपिटर हाउस ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि कक्षा 6 से 12 वर्ग में सैटर्न हाउस ने प्रथम स्थान हासिल किया।

बाबा कालीनाथ ऑक्सीजन बाग में पूर्व विधायक ने किया पौधरोपण

- पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधरोपण के साथ देखभाल भी जरूरी : सुरेंद्र पंवार

हरिभूमि न्यूज ›› सोनीपत

सोनीपत। सोनीपत से पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार पौधरोपण करते हुए। *फोटो :हरिभूमि*

सोनीपत से पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार ने रेवली स्थित बाबा कालीनाथ ऑक्सीजन बाग में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस दौरान उन्होंने क्षेत्रवासियों से अधिक से अधिक पौधे लगाने तथा उनकी नियमित देखभाल करने की अपील की। कार्यक्रम में स्थानीय ग्रामीणों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और गणमान्य लोगों ने भी भाग लिया। पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार ने कहा कि आज प्रदूषण, बढ़ता तापमान और जलवायु परिवर्तन पूरे समाज के सामने गंभीर चुनौती बनकर खड़े हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए केवल सरकारी प्रयास पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि हर नागरिक को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। उन्होंने कहा कि पेड़-पौधे प्रकृति का अनमोल उपहार हैं, जो हमें स्वच्छ हवा, छाया, वर्षा और बेहतर वातावरण प्रदान करते हैं। कहा कि पौधारोपण को केवल एक दिन या औपचारिक कार्यक्रम तक सीमित नहीं रखना चाहिए।

गोहाना। पिंगली वेंकैया नायडू को याद करते नागरिक। *फोटो : हरिभूमि*

वेंकैया नायडू को 63वीं पुण्यतिथि पर किया नमन

गोहाना। शहर के पुराने बस अड्डे पर स्थित सत नगर में शनिवार को पिंगली वेंकैया नायडू की 63वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि समारोह आयोजित किया गया। समारोह में पिंगली वेंकैया के चित्र पर पुष्प अर्पित करके श्रद्धांजलि दी गई। मुख्य वक्ता आजाद हिंद देशभक्त मोर्चा के निदेशक डॉ. सुरेश सेतिया ने कहा पिंगली वेंकैया नायडू भारत के एक महान स्वतंत्रता सेनानी व दूरदर्शी नेता थे। वह भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के प्रारंभिक डिजाइनकार थे जिसके चलते उन्हें झंडा वेकैया भी कहते हैं। वह एक महान भू-विज्ञानी, शिक्षाविद और कृषि विशेषज्ञ थे। उनकी भाषाओं पर भी गहरी पकड़ थी। श्रद्धांजलि समारोह की अध्यक्षता मोर्चे के मुख्य संरक्षक आजाद सिंह दांगी ने की। उन्होंने कहा युवावस्था में वेकैया ने साउथ अफ्रीका जाकर दूसरे विश्व युद्ध में ब्रिटिश इंडियन आर्मी के सैनिक के रूप में भूमिका अदा की। वेंकैया ने 4 जुलाई 1963 को गरीबी में अंतिम सांस ली। इस मौके पर उधम सिंह, मनोज सैनी, अनिल शर्मा, हिमांशु, सोमवीर, प्रियंका, रेशु, तनु बागड़ी, संगीता, लता व शाहिदनमुल्ला सहित अन्य गणमान्य मौजूद रहे।

पर्यटन मंत्री ने सिंचाई विश्राम गृह में सुनीं समस्याएं

संवेदनशीलता से करें शिकायतों का निवारण

समस्याओं का समाधान बिना किसी देरी के करने के निर्देश

हरिभूमि न्यूज ›› गोहाना

गोहाना। जनसंवाद कार्यक्रम में लोगों की शिकायतें सुनते मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा।

सहकारिता, कारागार, निर्वाचन, विरासत व पर्यटन मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा ने शनिवार को गोहाना स्थित सिंचाई विश्राम गृह में आयोजित जनसंवाद कार्यक्रम के दौरान आमजन से भेंट कर उनकी समस्याएं एवं शिकायतें सुनीं। मौके पर प्राप्त शिकायतों पर संबंधित विभागों के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते समयबद्ध एवं प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा। कैबिनेट मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार जनसेवा और सुशासन के संकल्प के साथ कार्य कर रही है। सरकार की स्पष्ट नीति है कि आम नागरिक की समस्या का समाधान बिना किसी अनावश्यक देरी के हो। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रत्येक शिकायत का गंभीरता, संवेदनशीलता और जवाबदेही के साथ निस्तारण किया जाए, ताकि लोगों का शासन-प्रशासन पर विश्वास और अधिक मजबूत हो।

गणना प्रपत्र जमा करवाएं

सहकारिता मंत्री डॉ शर्मा ने भारत निर्वाचन आयोग द्वारा संचालित विशेष मतदाता पुनरीक्षण अभियान का भी उल्लेख किया। उन्होंने सभी पात्र मतदाताओं से अपील की कि वे निर्धारित गणना प्रपत्र को सही प्रकार से भरकर अपने संबंधित बीएलओ के पास समय रहते अवश्य जमा कराएं, ताकि उनका नाम मतदाता सूची में सुरक्षित बना रहे और वे लोकतंत्र के इस महापर्व में अपने मताधिकार का निर्बाध उपयोग कर सकें।

एसडीएम ने दौरा कर मतदाताओं को किया जागरूक

एसआईआर की जानकारी देते एसडीएम अमित भारद्वाज।

खरखौदा। विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान के तहत खरखौदा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के निर्वाचक पंजीयन अधिकारी एवं उपमंडल अधिकारी (ना.) अमित भारद्वाज ने गांव रोहणा, खरखौदा, प्रहलादपुर, किढोली तथा सैदपुर का दौरा कर पुनरीक्षण कार्यों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने बीएलओ, सुपरवाइजरों, जनप्रतिनिधियों एवं ग्रामीणों के साथ बैठक कर अभियान की प्रगति की समीक्षा की तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। एसडीएम अमित भारद्वाज ने ग्रामीणों से अपील करते हुए कहा कि सभी पात्र नागरिक अपने-अपने एनुमरेशन फॉर्म को जल्द से जल्द सही एवं पूर्ण जानकारी के साथ भरकर संबंधित बीएलओ के पास जमा करवाएं, ताकि मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण निर्धारित समय सीमा में सफलतापूर्वक पूरा किया जा सके। उन्होंने कहा कि प्रत्येक परिवार का सहयोग इस अभियान की सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि विशेष गहन पुनरीक्षण-2026 का मुख्य उद्देश्य विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र की मतदाता सूची को पूर्णतः शुद्ध, अद्यतन एवं त्रुटिरहित बनाना है। इसके अंतर्गत नए पात्र मतदाताओं का पंजीकरण, मृत एवं स्थानांतरित मतदाताओं के नाम हटाना तथा मतदाता विवरण में आवश्यक संशोधन सुनिश्चित किए जा रहे हैं, जिससे प्रत्येक पात्र नागरिक अपने मताधिकार का प्रयोग कर सके। एसडीएम ने सभी बीएलओ को निर्देश दिए कि वे घर-घर जाकर एनुमरेशन कार्य पूरी गंभीरता एवं पारदर्शिता के साथ करें तथा प्रत्येक परिवार तक पहुंच बनाकर निर्धारित समयावधि में सभी फॉर्म प्राप्त करना सुनिश्चित करें।

बाबा कॉलोनी, पुराना औद्योगिक क्षेत्र, मोहन नगर सहित वार्ड 10 में गहराया पेयजल संकट, लोग परेशान

शहर में धीरे-धीरे पैर पसार रही पेयजल आपूर्ति की अव्यवस्था, अधिकारी मस्त व जनता त्रस्त

- कॉलोनी वासियों का आरोप बाबा कॉलोनी, पुराना औद्योगिक क्षेत्र, मोहन नगर में हर दो दिन बाद पेयजल आपूर्ति का बना रहता है अभाव

पेयजल आपूर्ति के नाम पर हो रही दूषित पानी की सप्लाई, लोग अव्यवस्था के बीच जीवन यापन करने को मजबूर, पेयजल की कमी से लोगों के दिनचर्या के कार्य हो रहे प्रभावित, झेलनी पड़ रही परेशानी, कैंपर खरीदकर चला रहे पेयजल का काम, समस्या का समाधान नहीं हुआ तो नगर निगम प्रशासन के खिलाफ सड़कों पर उतरने को मजबूर होंगे क्षेत्र वासी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

नगर निगम क्षेत्र में पेयजल आपूर्ति की अव्यवस्था धीरे-धीरे अपने पैर पसारती नजर आ रही है। अधिकारी जहां कार्यालयों में एसी के नीचे बैठकर आरओ का पानी पीकर मस्त हैं, वहीं धरातल पर जनता त्रस्त होकर त्राहि माम, त्राहि माम पुकार रही है। फिर भी जनता की पुकार सुनने वाले नजर नहीं आ रहे हैं। आरोप है कि चुनावी मौसम में जनप्रतिनिधि भी वोट हथियाने के लिए हाथ जोड़कर गलियों का भ्रमण करते हैं। इसके बाद जनता की सुध लेने वाले दूर-दूर तक दिखाई नहीं पड़ रहे हैं। मुद्दे की बात करें तो शहर के तीन क्षेत्रों से शुरू हुआ पेयजल आपूर्ति का संकट अब बाबा कॉलोनी, पुराना औद्योगिक क्षेत्र, मोहन नगर, लक्ष्मण कॉलोनी सहित पुराने वार्ड-14 व नए वार्ड-10 के गलियारों तक पहुंच चुका है। इतना ही नहीं, करीब 6-7 घंटे तक लगातार बिजली आपूर्ति के लंबे कट लग रहे हैं। आरोप है कि इन क्षेत्रों में लगातार करीब 34 घंटे से पेयजल आपूर्ति नहीं हुई है। पानी आता है, तो लाइट के दर्शन दुर्लभ हो रहे हैं। लोगों का आरोप है कि बाबा कॉलोनी, मोहन नगर वासियों की करीब 15 साल से कोई सुध नहीं ली जा रही है। प्रॉपर्टी टैक्स, सीवर-पेयजल टैक्स देने के बावजूद हाल बेहाल हो रहे हैं, जबकि शहर के योजनाओं के सहारे चमकाने के दिखावे किए जा रहे हैं, लेकिन हकीकत में शहर की कई कॉलोनियों में विभिन्न समस्याओं के अंबार से जनजीवन प्रभावित है। बाबा कॉलोनी, मोहन नगर में प्रॉपर्टी, सीवर-पेयजल टैक्स वसूलने के बावजूद मूलभूत सुविधाएं नजर नहीं आ रही हैं। खुले में नालियां गंदगी व दूषित पानी से अटी पड़ी हैं। खस्ताहाल गलियां जल्द समाधान करवाने की गुहार लगा रही हैं। वहीं वार्ड पार्षद संजय मिश्रा ने बताया कि बिजली की समस्या के चलते पेयजल आपूर्ति प्रभावित हुई है।

सोनीपत। बाबा कॉलोनी में सड़क पर जमा दूषित पानी।

सोनीपत। की बाबा कॉलोनी में नालियां जाम होने से फैला दूषित पानी।

सोनीपत। बाबा कॉलोनी में पेयजल आपूर्ति की अव्यवस्था पर रोष जताते कॉलोनी वासी।

आसपास लगते क्षेत्रों में सीवर संबंधी समस्या का निदान कराने के लिए निगम ने अमृत योजना के तहत 65 करोड़ रुपये खर्च कर सीवर लाइन डलवाई है, लेकिन इन क्षेत्रों का अब तक मुख्य लाइन से जुड़ाव नहीं हुआ है। समस्या बरकरार है। शहर में लोगों को बेहतर सुविधाएं मुहैया करवाने के दावे किए जा रहे हैं, लेकिन हकीकत इसके विपरीत है। **-कृष्ण कुमार**

क्षेत्र में दो दिन से पेयजल आपूर्ति नहीं हो पाई है। शिकायत करने पर कभी सुबह, कभी शाम को पानी आने की बात कही जाती है। शुक्रवार सुबह एक घंटा पानी आने के बाद शनिवार शाम तक पानी नहीं आया। क्षेत्र में कई बार दूषित पेयजल आपूर्ति की जा रही है। इसे पीना तो दूर, अन्य कार्यों में भी प्रयोग नहीं हो रहा है। **-सुनीता देवी**

बाबा कॉलोनी व मोहन नगर की पेयजल आपूर्ति महलाना रोड स्थित बूस्टिंग स्टेशन से की जा रही है। पेयजल आपूर्ति का कोई समय नहीं है। पंप ऑपरेटर पानी सप्लाई में अपनी मनमानी कर रहे हैं। वोट देने के बाद भी उनकी समस्याओं का निदान नहीं हो रहा है। केवल झूठे आश्वासन पर जिंदगी बसर कर रहे हैं। **-शकुंतला देवी**

जल्द ही किया जाएगा समाधान

बाबा कॉलोनी, मोहन नगर में पेयजल आपूर्ति प्रभावित होने का मामला संज्ञान में नहीं है, जल्द ही लोगों की समस्या का समाधान करवाया जाएगा। निकासी व्यवस्था के लिए कॉलोनियों में सीवर लाइन डाली गई है। इसके लिए खाटू श्याम मंदिर के पास 40 फीट गहरा डिस्पोजल भी बना है। उचित प्रबंध के लिए मोटर व जनरेटर की व्यवस्था कराई गई है।
-राजीव जैन, मेयर, नगर निगम, सोनीपत

पेयजल आपूर्ति में मनमर्जी रवैया अपनाने का आरोप

लोगों का आरोप है कि आश्वासनों के ढेर के तले दबे कॉलोनी वासियों को हर दूसरे दिन पेयजल किल्लत का सामना करना पड़ रहा है। कई बार लगातार दो-दो दिन पेयजल आपूर्ति नहीं हो रही है। कई बार सुबह 6 बजे, तो कई बार 7 बजे पेयजल आपूर्ति की जाती है। इसके बाद लगातार दो-दो दिन पानी के दर्शन नहीं हो पाते हैं। अधिकतर बार दूषित पेयजल आपूर्ति हो रहा है। पेयजल आपूर्ति में मनमर्जी रवैया अपनाया जा रहा है। इस बारे में कई बार नगर निगम अधिकारियों को शिकायत की जा चुकी है, लेकिन उनका जीवन केवल आश्वासनों पर निर्भर रह चुका है। लोगों की इन समस्याओं पर न तो राजनीतिक, न ही प्रशासनिक स्तर पर किसी ने उचित कार्यवाही की जिम्मेवारी ली है। पेयजल व्यवस्था बाजारू कैंपरों पर निर्भर हो रही है।

गन्नौर। विधायक देवेंद्र कादियान ग्रामीणों को संबोधित करते हुए।

सैय्याखेड़ा में 44 लाख रुपये के विकास कार्यों का किया उद्घाटन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

विधायक देवेंद्र कादियान ने शनिवार को गांव सैय्याखेड़ा में करीब 44 लाख रुपये की लागत से विभिन्न विकास कार्यों का उद्घाटन-शिलान्यास किया। उन्होंने सड़कों और रास्तों के निर्माण कार्य शुरू कराए तथा पूर्ण हो चुकी गलियों का उद्घाटन किया। ग्रामीणों ने जलभराव, बिजली आपूर्ति और पीडब्ल्यूडी रोड पर उखड़े ब्लाक दोबारा बिछवाने की मांग रखी। विधायक ने संबंधित अधिकारियों को मौके पर ही आवश्यक निर्देश देते हुए समस्याओं के जल्द समाधान का भरोसा दिलाया। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में जल्द ही चार नए पावर हाउस शुरू होने वाले हैं। जिसके बाद बिजली व्यवस्था में सुधार आएगा। विधायक ने कहा कि गन्नौर में बन रही अंतर्राष्ट्रीय बागवानी मंडी से किसानों को अपनी उपज का बेहतर बाजार मिलेगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि दिसंबर तक मंडी शुरू हो सकती है और इसका शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों कराने का प्रयास किया जा रहा है। इस दौरान सरपंच अत्तर सिंह सहित अनेक ग्रामीण मौजूद रहे।

जिला बार एसोसिएशन की बैठक, तीन अधिवक्ताओं पर कार्रवाई का निर्णय

सोनीपत। जिला बार एसोसिएशन, सोनीपत के प्रधान कमल हुड्डा की अध्यक्षता में शनिवार को बार सभागार में जनरल हाउस की बैठक आयोजित की गई। बैठक में बड़ी संख्या में अधिवक्ताओं ने भाग लिया। मुख्य एजेंडा स्पेशल इंक्वायरी कमेटी की रिपोर्ट पर विचार-विमर्श करना तथा बार से जुड़े विभिन्न विषयों पर निर्णय लेना था। कमेटी के चेयरमैन एडवोकेट अनूप सिंह दहिया ने जांच रिपोर्ट सदन के समक्ष प्रस्तुत की, जिस पर विस्तृत चर्चा के बाद कई प्रस्ताव पारित किए गए। बैठक में जनरल हाउस ने वाइस प्रेसिडेंट सोनू भारद्वाज को लगाए गए आरोपों में दोषी मानते हुए 50 हजार रुपये का जुर्माना लगाने और बार से डी-बार करने का निर्णय लिया। पूर्व प्रधान अनिल ढुल को बार का रिकॉर्ड छिपाने, पद के दुरुपयोग तथा बार के धन के कथित गबन के आरोपों में दोषी मानते हुए उन्हें डी-बार करने, दो लाख रुपये का जुर्माना लगाने तथा 32,35,575 रुपये की रिकवरी के आदेश पारित किए गए। साथ ही उनके प्रैक्टिस लाइसेंस निरस्त करने की संस्तुति पंजाब एंड हरियाणा बार काउंसिल को भेजने और प्राथमिकी दर्ज कराने का निर्णय लिया गया।

पात्र युवाओं के वोट अवश्य बनवाएं : बिजेंद्र मलिक

गोहाना। बैठक में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए वक्ता। फोटो : हरिभूमि

- सेक्टर-7 स्थित कम्युनिटी सेंटर में गोहाना विधान सभा की हुई बैठक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

शनिवार को सेक्टर-7 स्थित कम्युनिटी सेंटर में भाजपा जिला गोहाना विधान सभा के बीएलए-2 एवं बूथ अध्यक्षों की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता जिला गोहाना भाजपा अध्यक्ष बिजेंद्र मलिक ने की। सानिध्य प्रभारी डॉ. किरण कलकल का रहा।

जिला अध्यक्ष बिजेंद्र मलिक ने कहा कि जन संघ के संस्थापक श्यामप्रसाद मुखर्जी का जन्म दिवस सेवा पखवाड़ा के रूप में मनाया जाएगा। कार्यकताओं को सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़ कर भाग लेने के लिए आह्वान किया। उन्होंने कहा कि बीएलए-2 एवं बूथ अध्यक्षों को एसआईआर के तहत 18 साल की आयु पूर्ण के चुके युवाओं की नई वोट बनवाएं। प्रभारी डॉ. किरण कलकल ने कार्यकर्ताओं को डिजिटल प्रशिक्षण लेने के साथ राष्ट्र प्रथम की भावना से काम करने के लिए कहा। इस मौके पर जिला महामंत्री महेंद्र चिड़ाना एवं जितेन्द्र शर्मा, डॉ. रमेश कश्यप, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, भूपेंद्र मुदगिल, प्रवीण खुराना, संजय दहिया, विनोद भौरिया, राजू पटवा, डॉ.राममेहर राठी, सुनील लाकड़ा, सौरभ, किरण सैनी, नरेश खानपुर, हवा सिंह वर्मा, प्रसन्नी मलिक, सूरजमल शर्मा व प्रवीण खुराना आदि उपस्थित रहे।

समिति के स्थापना दिवस पर की नाले-नालियों की सफाई

- ग्राम सुधार समिति की टीम ने गांव खन्दराई में चलाया सफाई अभियान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

ग्राम सुधार समिति खन्दराई द्वारा अपने 5वें स्थापना दिवस पर शनिवार को स्वच्छता अभियान चलाया गया। अभियान के तहत समिति के सदस्यों ने कस्सी और फावड़ों की सहायता से गांव खन्दराई में दूषित पानी के नाले और नालियों की सफाई की गई। इस सेवा के लिए मार्गदर्शन समिति के संस्थापक अध्यक्ष जगमहेन्द्र खन्दराई का रहा। गांव के विकास में आने वाली समस्याओं को देखते हुए 4 जुलाई 2021 को ग्राम सुधार समिति खन्दराई का गठन किया गया था। यह समिति सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रहने के साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करती है। समिति के स्थापना दिवस पर शनिवार को गांव खन्दराई में दूषित पानी के नालों और नालियों से कीचड़ बाहर और कचरा बाहर निकाल कर सफाई की गई ताकि दूषित पानी की समुचित निकासी हो सके। उल्लेखनीय कार्यों के लिए समिति को पंचायत एवं मंडल स्तर पर कई बार सम्मानित भी किया जा चुका है।

गोहाना। दूषित पानी के नालों की सफाई करते हुए समिति अध्यक्ष और सदस्य। फोटो : हरिभूमि

विधायक इंदुराज नरवाल ने जिला उपायुक्त को लिखा पत्र

गोहाना। बरोदा विधानसभा के विधायक इन्दुराज नरवाल (भालू) ने बरोदा विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न गांवों की वर्ष 2002 की मतदाता सूची उपलब्ध करवाने की मांग को लेकर जिला उपायुक्त ईमेल के माध्यम से एक पत्र भेजा। विधायक ने कहा कि चुनाव आयोग द्वारा 15 जून से 14 जुलाई, 2026 तक चल रहे मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान के अंतर्गत वर्ष 2002 एवं 2024 की मतदाता सूचियों का मिलान किया जा रहा है, ताकि प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में सुनिश्चित किया जा सके। उन्होंने कहा कि अत्यंत खेद का विषय है कि बरोदा विधानसभा क्षेत्र के मुंडलाना एवं कथूरा खंडों के अंतर्गत आने वाले लगभग 38 गांवों की वर्ष 2002 की मतदाता सूची भारत निर्वाचन आयोग के ऑनलाइन पोर्टल पर उपलब्ध नहीं है। इन गांवों के लिए वर्ष 2002 के स्थान पर केवल वर्ष 1999 की मतदाता सूची ही प्रदर्शित हो रही है। इस कारण अनेक पात्र मतदाताओं का आवश्यक रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं हो पा रहा है, जिससे उनके नाम मतदाता सूची में जोडने, सत्यापन करने तथा एसआईआर अभियान की प्रक्रिया प्रभावित हो रही है। यदि इस तकनीकी अथवा अभिलेखीय समस्या का शीघ्र समाधान नहीं किया गया, तो अनेक पात्र नागरिक अपने संवैधानिक मताधिकार से वंचित रह सकते हैं, जो लोकतंत्र की मूल भावना के विपरीत होगा।

15 दिन बाद भी कार्रवाई नहीं, पुलिस पर लगाया सुनवाई न करने का आरोप

गन्नौर। अपनी शिकायत लेकर थाना गन्नौर पहुंची पीड़िता व उसके स्वजन।

गन्नौर। पुरखास गांव निवासी एक महिला ने मारपीट के मामले में पुलिस पर कार्रवाई नहीं करने का आरोप लगाया है। पीड़िता सीता ने बताया कि करीब 15 दिन पहले उसके देवर सतीश ने उसके आंगन में पशु बांध दिए थे। विरोध करने पर देवर सतीश और देवरानी मनीता ने लोहे की राड से हमला कर दिया, जिससे वह घायल हो गई। मामले की शिकायत गन्नौर थाना पुलिस को दी गई और मेडिकल भी कराया गया, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। शनिवार को सीता अपने स्वजनों के साथ गन्नौर थाना पहुंची, लेकिन वहां न थाना प्रभारी मिले और न ही जांच अधिकारी। पीड़िता का आरोप है कि शिकायत देने के बावजूद पुलिस उनकी सुनवाई नहीं कर रही है।

जय ने प्रथम प्रयास में की सीए फाउंडेशन परीक्षा उत्तीर्ण

गोहाना। जय गोयल को स्मृति चिहन भेंट करके सम्मानित करते प्राचार्य।

गोहाना। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान द्वारा संचालित गीता विद्या मंदिर, गोहाना के वर्तमान सत्र के मेधावी विद्यार्थी जय गोयल ने प्रथम प्रयास में ही सीए फाउंडेशन परीक्षा उत्तीर्ण कर उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त की है। शनिवार को विद्यालय में प्राचार्य अश्विनी कुमार, छात्र के पिता मनीष गोयल व शिक्षकों ने सम्मानित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। जय गोयल ने अपनी इस सफलता का श्रेय विद्यालय में निरंतर उपस्थिति के साथ अपने शिक्षकों व अभिभावकों के सटीक मार्गदर्शन को दिया। प्राचार्य अश्विनी कुमार ने कहा कि यह उपलब्धि विद्यालय के अन्य विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणास्रोत है तथा यह सिद्ध करती है कि दृढ़ संकल्प, सतत परिश्रम और उचित मार्गदर्शन से कोई भी लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। विद्यालय में शिक्षकों ने जय गोयल के साथ उसके माता-पिता को फूलों की मालाएं पहनाकर एवं स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया।

गन्नौर। यातायात इंचार्ज रेलवे रोड पर अभियान चलाते हुए।

यातायात पुलिस ने रेलवे रोड से जीटी रोड फ्लाईओवर तक हटाया अतिक्रमण

गन्नौर। यातायात पुलिस ने शनिवार को शहर में अवैध अतिक्रमण हटाने के लिए विशेष अभियान चलाया। अभियान के तहत नगर पालिका के सहयोग से रेलवे रोड चौक से लेकर जीटी रोड फ्लाईओवर के नीचे तक सड़क और फुटपाथ पर किए गए अवैध अतिक्रमण को हटाया गया। इस दौरान रेहड़ियां, खोखे तथा अन्य अस्थायी कब्जों को हटाकर यातायात को सुचारु बनाया गया। कार्रवाई के दौरान पुलिस और नगर पालिका की टीम ने संबंधित लोगों को भविष्य में सार्वजनिक स्थानों पर दोबारा अतिक्रमण नहीं करने की चेतावनी भी दी। पुलिस ने कहा कि सार्वजनिक सड़कों और बाजारों में अवैध अतिक्रमण किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

स्टेट वुशु चैंपियनशिप में प्रताप स्कूल के खिलाड़ियों ने दो पदक जीते

हरिभूमि न्यूज ▶▶| खरखौदा

शामली में आयोजित उत्तर प्रदेश वुशु चैंपियनशिप-2026 में प्रताप स्कूल के खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया है। खिलाड़ी दृश्य चौधरी ने 48 किलोग्राम भार वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर शानदार उपलब्धि हासिल की। दृश्य चौधरी मूल रूप से गांव दयालपुर, जिला बिजनौर के निवासी हैं। वहीं विद्यालय के दूसरे खिलाड़ी आशीष ने 70 किलोग्राम भार वर्ग में कांस्य पदक जीतकर विद्यालय की उपलब्धियों में एक और अध्याय जोड़ दिया। आशीष गांव कोसीकलां, जिला मथुरा के निवासी हैं। पदक विजेता खिलाड़ियों के विद्यालय पहुंचने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य दया दहिया, डॉ. दीपिका दहिया, वुशु कोच विनोद गुलिया, दिवस कटारिया, नरेंद्र कुमार तथा स्वर्ण पदक विजेता दृश्य चौधरी के दादा अरुण कुमार ने खिलाड़ियों का फूल-मालाओं एवं मिठाई खिलाकर अभिनंदन किया। प्रधानाचार्य दया दहिया एवं डॉ. दीपिका दहिया ने खिलाड़ियों की इस सफलता पर उन्हें बधाई देते हुए कहा कि कठिन परिश्रम, अनुशासन और निरंतर अभ्यास से ही राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सफलता प्राप्त की जा सकती है। वुशु कोच विनोद गुलिया ने विश्वास जताया कि आने वाले समय में प्रताप स्कूल के खिलाड़ी राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी इसी प्रकार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय, प्रदेश और देश का नाम रोशन करेंगे।

खरखौदा। खिलाड़ियों का स्वागत करते स्कूल प्रबंधन।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 9653530209, 9253681005, 9253681010

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन 0130-4012310, 9253681028

राष्ट्रीय बॉक्सिंग चैंपियनशिप में आरव देहलान ने जीता रजत पदक

- सरस्वती शिक्षा संस्थान ने छात्र की उपलब्धि पर जताया गर्व

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

सरस्वती शिक्षा संस्थान (एस-7) के छात्र आरव देहलान ने वर्ष 2026 की राष्ट्रीय स्तर की बॉक्सिंग चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि से संस्थान, अभिभावकों और क्षेत्र में खुशी का माहौल है। आरव की सफलता पर संस्थान परिवार ने इसे कड़ी मेहनत, अनुशासन और समर्पण का परिणाम बताया। संस्थान के निदेशक दीपक शर्मा, प्रधानाचार्य डॉ. अंकुर रोहिल्ला तथा मुख्याध्यापिका ने आरव देहलान को इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि आरव ने राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर संस्थान का नाम रोशन किया है। उनकी सफलता अन्य विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणास्रोत है और यह साबित करती है कि निरंतर अभ्यास, अनुशासन और लगन से बड़े लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। संस्थान ने कहा कि उसे आरव देहलान की उपलब्धि पर गर्व है और भविष्य में भी उनसे इसी तरह उत्कृष्ट प्रदर्शन की उम्मीद है।

सोनीपत। विजेता विद्यार्थी आरव देहलान अपने सर्टिफिकेट के साथ।

पुरुष-महिला मुकाबलों में खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन कर रोमांच बिखेरा

राज्यस्तरीय नेटबॉल मुकाबलों में दिखा दमखम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी राई में शनिवार को सीनियर राज्य स्तरीय नेटबॉल चैंपियनशिप (पुरुष व महिला) सत्र 2026-27 का भव्य शुभारंभ हुआ। प्रतियोगिता के पहले दिन खिलाड़ियों में जबरदस्त उत्साह और खेल भावना देखने को मिली। नेटबॉल एसोसिएशन हरियाणा की महासचिव बबीता दहिया ने बताया कि प्रतियोगिता में हरियाणा के विभिन्न जिलों की टीमें भाग ले रही हैं और खिलाड़ियों का प्रदर्शन नेटबॉल के उज्ज्वल भविष्य की झलक दिखा रहा है।

सोनीपत। प्रतियोगिता के दौरान प्रतिभागी खिलाड़ियों के साथ एसोसिएशन पदाधिकारी।

ये रहे परिणाम

पुरुष वर्ग में रोहतक ने पंचकूला को 28-10, फतेहाबाद ने गुरुग्राम को 31-30, कैथल ने जींद को 27-16, सोनीपत ने अंबाला को 15-09, हिसार ने रेवाड़ी को 18-08 तथा झज्जर ने फरीदाबाद को 17-10 से हराया। महिला वर्ग में कैथल ने फतेहाबाद को 40-35 और सोनीपत ने झज्जर को 27-22 से पराजित किया। बबीता दहिया ने बताया कि प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने बेहतरीन तालमेल, फिटनेस और तेज खेल का प्रदर्शन किया। चैंपियनशिप में मुख्य अतिथि के रूप में विजय कौशिक, जनरल सेक्रेटरी दिल्ली नेटबॉल एसोसिएशन, विकास शर्मा, प्रेसिडेंट नेटबॉल एसोसिएशन चंडीगढ़, रॉबिन मलिक, करण सिंह डागर और संसार दहिया मौजूद रहे। दर्शकों ने भी खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।

क्या कभी हो पाएगी एलियन से मुलाकात !

क्या एलियन कभी पृथ्वी पर आएंगे? क्या उनसे हमारी मुलाकात हो पाएगी? इस सवाल का फिलहाल कोई सीधा 'हां' या 'ना' में जवाब देना मुश्किल है। एलियंस का धरती पर आना भले ही अभी विज्ञान कथाओं की तरह लगता हो, लेकिन वैज्ञानिक प्रयासों से भविष्य में, असंभव सा लगने वाला कुछ भी संभव हो सकता है।

कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन

रात के समय जब हम आसमान में टिमटिमाते हुए तारों को देखते हैं, तो हमारे मन में एक सवाल बार-बार उठता है, 'क्या इस विशाल ब्रह्मांड में हम अकेले हैं?' या फिर किसी दूर के ग्रह पर हमारे जैसे ही या हमसे भी ज्यादा समझदार जीव रहते हैं? इन्हीं बाहरी दुनिया के जीवों को हम 'एलियन' या 'एक्स्ट्राटेरेस्ट्रियल' कहते हैं। गणितीय संभावनाओं को देखें तो ब्रह्मांड में कहीं न कहीं जीवन जरूर होना चाहिए। लेकिन अंतरिक्ष की असीम दूरियों को देखते हुए, उनका हमारे पास आना या हमारा उन तक पहुंचना बहुत ही कठिन काम है। वैज्ञानिकों का मानना है कि आने वाले कुछ दशकों में, जैसे-जैसे हमारी तकनीक और बेहतर होगी, हम शायद सौर मंडल के किसी चांद या बाहरी ग्रह पर जीवन के छोटे अंश (जैसे बैक्टीरिया) खोजने में सफल हो जाएंगे।

क्यों बरकरार है संभावना

वैज्ञानिकों के अनुसार, हमारे ब्रह्मांड में अरबों आकाशगंगाएं हैं और हर आकाशगंगा में खरबों तारे और ग्रह हैं। इतनी बड़ी जगह में सिर्फ हमारी पृथ्वी पर ही जीवन हो, ऐसा होना थोड़ा मुश्किल लगता है। इसलिए लगता है कि इस यूनिवर्स में कोई न कोई दूसरी दुनिया हो सकती है। खगोल वैज्ञानिक भी इस विषय पर यही सोचते हैं। इसीलिए वे सालों से एलियंस की खोज कर रहे हैं।

क्या एलियन पृथ्वी पर आएंगे!

हालांकि आम लोगों का मानना है कि कभी न कभी एलियन पृथ्वी पर आए होंगे या आएंगे। लेकिन वैज्ञानिक इस सवाल का जवाब तर्क के आधार पर खोजते हैं। एलियन पृथ्वी पर क्यों आना चाहेंगे? इसके वे कई तर्क देते हैं-

नए घर की खोज: जैसे हमारे वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर जीवन तलाश रहे हैं, वैसे ही एलियन भी अपने रहने के लिए एक नए और सुरक्षित ग्रह की तलाश में पृथ्वी पर आ सकते हैं।

संसाधनों की तलाश: अगर उनके अपने ग्रह के प्राकृतिक संसाधन जैसे पानी, खनिज या ऊर्जा आदि खत्म हो गए हों, तो वे पृथ्वी के संसाधनों का उपयोग करने के लिए यहां का रुख कर सकते हैं।

जिज्ञासा और शोध: हो सकता है कि एलियन भी हमारी पृथ्वी के वैज्ञानिकों की तरह खोजी स्वभाव के हों। वे ब्रह्मांड के दूसरे जीवों यानी हम इंसानों के बारे में जानने और हमसे दोस्ती करने के लिए हमारे पास आ सकते हैं।

तकनीकी श्रेष्ठता: अगर कोई सभ्यता हमसे लाखों साल पुरानी है, तो उनके पास ऐसे स्पेसशिप हो सकते हैं जो रोशनी की रफ्तार से भी तेज चल सकें। ऐसी तकनीक होने पर उनके लिए पृथ्वी तक आना बहुत आसान होगा।

इसके विपरीत एलियन का आना क्यों मुश्किल है, इसके भी कुछ तर्क देते हैं-

अत्यधिक दूरी: ब्रह्मांड इतना बड़ा है कि हमारे सबसे करीबी तारे प्रॉक्सिमा सेंचुरी तक पहुंचने में भी आज की तकनीक से हजारों साल लग जाएंगे। एलियंस के लिए भी इतनी लंबी दूरी तय करना एक बड़ी चुनौती होगी।

समय का चक्र: हो सकता है कि ब्रह्मांड के किसी कोने में एलियन रहे हों, लेकिन वे इंसानों के पैदा होने से करोड़ों साल पहले ही खत्म हो चुके हों, या फिर वे तब आएंगे, जब इंसान धरती से गायब हो चुके होंगे।

संवाद की कमी: हमारी भाषा, रेडियो सिग्नल और सोचने का तरीका उनसे बिल्कुल अलग हो सकता है। मुमकिन है कि वे हमारे सिग्नलों को समझ ही न पा रहे हों।

वैज्ञानिक शोध और प्रयास

वैज्ञानिकों ने एलियंस को ढूंढ़ने और उनसे संपर्क करने के लिए कई प्रयास किए हैं।

सेटी प्रोजेक्ट: सर्च फॉर एक्स्ट्रा टेरेस्ट्रियल इंटेलिजेंस, दुनिया का सबसे बड़ा संगठन है, जो अंतरिक्ष से आने वाले रहस्यमयी सिग्नलों पर नजर रखता है। वैज्ञानिक बड़े-बड़े रेडियो टेलीस्कोप का इस्तेमाल करके आसमान से आने वाली आवाजों और तरंगों को सुनते हैं, ताकि एलियंस का कोई संदेश पकड़ा जा सके।

वोयाजर के गोल्डन रिकॉर्ड्स: साल 1977 में नासा ने अंतरिक्ष में दो स्पेसक्राफ्ट भेजे थे, जिनका नाम 'वोयाजर 1' और 'वोयाजर 2' है। इन स्पेसशिप में एक तांबे की बनी सीडी जैसी 'गोल्डन डिस्क' रखी गई है। इस डिस्क में पृथ्वी की आवाजें, संगीत, 55 भाषाओं में नमस्कार और हमारे ग्रह का नक्शा दर्ज है, ताकि अगर कभी यह किसी एलियन को मिले, तो वे हमारे बारे में जान सकें।

यूएफओ और यूएपी की जांच: दुनिया भर में कई बार आसमान में उड़ने वाली अजीबो-गरीब चीजों जैसे उड़न तश्तरी को देखने का दावा किया गया है। अब अमेरिकी सरकार और नासा जैसी एजेंसियां इन्हें 'यूएपी' (अनआइडेंटिफाइड एनोमैलुअस फैनोमेना) कहकर इन पर आधिकारिक रिसर्च कर रही हैं, ताकि यह साफ हो सके कि ये एलियंस के यान हैं या कोई प्राकृतिक घटना।

बहरहाल, भविष्य में कभी दूसरे ग्रह के वासियों एलियंस से पृथ्वीवासियों की कभी मुलाकात हो पाएगी या नहीं यह तो अभी नहीं कहा जा सकता लेकिन दुनिया भर के वैज्ञानिक इस कोशिश में हर संभव प्रयास कर रहे हैं। *

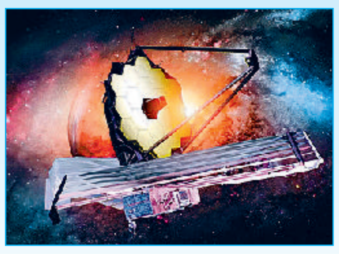

केपलर-जेम्स वेब टेलीस्कोप

नासा के इन आधुनिक टेलीस्कोपों का काम अंतरिक्ष में 'एक्सोप्लैनेट्स' यानी हमारे सौर मंडल से बाहर के ग्रह को खोजना है। वैज्ञानिकों ने अब तक हजारों ऐसे ग्रह खोजे हैं, जो 'गोल्डीलॉक्स जोन' में हैं। इसका मतलब है कि ये ग्रह अपने तारे से न तो बहुत ज्यादा गर्म हैं और न ही बहुत ज्यादा ठंडे, जहां पृथ्वी की तरह पानी और जीवन मौजूद हो सकता है। इसमें जीवन की संभावना भी हो सकती है।

मार्स मिशन

हमारे सबसे नजदीकी ग्रह मंगल पर पानी और जीवन के निशान खोजने के लिए भारत का 'मंगलयान', नासा के 'परसवेरेंस' रोवर जैसे कई मिशन भेजे गए हैं। इनके जरिए वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर सूक्ष्मजीवों के जीवाश्म ढूंढ़ रहे हैं, जो अंतरिक्ष वासी एलियन या जीवन का पहला ठोस सबूत हो सकते हैं।

चिंताजनक है लगातार बढ़ता अंतरिक्ष में वेस्ट मैटर

जिस तरह से हम सबने अपनी पृथ्वी पर प्रदूषक वस्तुओं और कूड़े-कचरे का अंबार लगा रखा है, कुछ ऐसा ही हाल अंतरिक्ष का भी होता जा रहा है। स्पेस में स्पेसक्राफ्ट, एस्ट्रोनॉट्स और सैटेलाइट्स का वेस्ट मैटर भविष्य में गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

स्पेस इश्यू
अंजू जैन

जब हम रात में आसमान की तरफ देखते हैं, तो हमें टिमटिमाते तारे, चंद्रमा और कभी-कभी गुजरते हुए सैटेलाइट्स (उपग्रह) दिखाई देते हैं। यह नजारा बेहद जादुई लगता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हमारे इस खूबसूरत अंतरिक्ष में एक बहुत बड़ी मुसीबत धीरे-धीरे पैर पसार रही है? इस मुसीबत का नाम है-'अंतरिक्ष का कचरा' या 'स्पेस डेब्री'।

क्या है स्पेस डेब्री: जैसे हम अपनी पृथ्वी पर प्लास्टिक, रैपर्स और खराब सामान फेंककर इसे गंदा कर रहे हैं, ठीक वैसे ही इंसानों ने अंतरिक्ष को भी कबाड़खाना बनाना शुरू कर दिया है। अंतरिक्ष कचरा या स्पेस जंक उन सभी मानव-निर्मित बेकार चीजों को कहते हैं, जो अब किसी काम की नहीं रहीं और पृथ्वी के चारों ओर अंतरिक्ष में चक्कर काट रही हैं। इस कचरे में बेकार हो चुके पुराने सैटेलाइट्स, रॉकेट्स के छूटे हुए टुकड़े, अंतरिक्ष यात्रियों के हाथ से छूटे हुए औजार (जैसे स्क्रू-ड्राइवर, ग्लव्स) और सैटेलाइट्स के आपस में टकराने से बने करोड़ों छोटे-छोटे टुकड़े शामिल हैं। वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार, इस समय अंतरिक्ष में लाखों छोटे-बड़े टुकड़े तैर रहे हैं, जो एक बड़े खतरे की घंटी हैं।

स्पेस डेब्री में शामिल चीजें: स्पेस डेब्री में बहुत कुछ हो सकता है। जैसे-जब किसी उपग्रह का जीवनकाल खत्म हो जाता है या उसका ईंधन समाप्त हो जाता है, तो वह वहीं अंतरिक्ष में निष्क्रिय होकर घूमने लगता है। उपग्रहों को अंतरिक्ष में छोड़ने के बाद रॉकेट के निचले और ऊपरी हिस्से अलग हो जाते हैं। ये हिस्से अंतरिक्ष में ही तैरते रह जाते हैं। जब दो सैटेलाइट्स आपस में टकराते हैं, तो उनके परखच्चे उड़ जाते हैं। एक टक्कर से हजारों नए छोटे-छोटे तीखे टुकड़े बन जाते हैं।

कुछ देश अपनी मिसाइल क्षमता को जांचने के लिए अंतरिक्ष में अपने ही पुराने सैटेलाइट को मिसाइल से उड़ा देते हैं। इससे पल भर में बेशुमार कचरा फैल जाता है।

स्पेस वेस्ट से संकट: अब आप सोच रहे होंगे कि अंतरिक्ष तो इतना विशाल है, फिर वहां थोड़े से कबाड़ से क्या फर्क पड़ता है? अंतरिक्ष हमारा भविष्य है। अगर आज हमने इसकी सफाई पर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाली पीढ़ी के लिए ब्रह्मांड के रहस्य जानने के सारे रास्ते बंद हो जाएंगे। इसके कई खतरनाक परिणाम हो सकते हैं। अंतरिक्ष में ये टुकड़े धीरे-धीरे नहीं तैरते। इनकी रफ्तार बंदूक की गोली से भी 10 से 15 गुना तेज होती है, लगभग 28,000 किलोमीटर प्रति घंटा। इतनी रफ्तार में एक छोटा-सा पेंट का टुकड़ा या पेंच भी किसी सैटेलाइट से टकराए, तो उसे पूरी तरह तबाह कर सकता है। इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन में हमेशा हमारे वैज्ञानिक रहते हैं। यदि कोई बड़ा टुकड़ा स्पेस स्टेशन से टकरा जाए, तो वहां रहने वाले अंतरिक्ष यात्रियों की जान पर बन आ सकती है। उन्हें कई बार खुद को बचाने के लिए आपातकालीन कैप्सूल में छिपना पड़ता है।

हम मोबाइल के जरिए जो बात करते हैं, जीपीएस से रास्ता देखते हैं, टीवी देखते हैं और मौसम का पूर्वानुमान लगाते हैं, वे सब अंतरिक्ष में मौजूद सैटेलाइट्स की वजह से संभव होता है। अगर कचरे की वजह से ये सैटेलाइट्स नष्ट हो गए, तो हमारी पृथ्वी की आधुनिक लाइफलाइन एकदम रुक-सी जाएगी। अगर अंतरिक्ष में कचरा बहुत ज्यादा बढ़ गया, तो वे आपस में टकराकर और अधिक कचरा बनाएंगे। एक समय ऐसा आएगा कि पृथ्वी के चारों ओर कचरे की ऐसी घनी दीवार बन जाएगी कि इंसान कभी नया रॉकेट या सैटेलाइट अंतरिक्ष में भेज ही नहीं पाएगा। हम हमेशा के लिए पृथ्वी पर कैद हो जाएंगे।

निदान और समाधान: अंतरिक्ष में बढ़ रहे कचरे की इस समस्या के समाधान के लिए वैज्ञानिक लगातार प्रयास कर रहे हैं। दुनिया भर की स्पेस एजेंसियां जैसे भारत की इसरो, अमेरिका की नासा इस मलबे को साफ करने के लिए बेहद अनोखे तरीकों पर काम कर रही हैं। वैज्ञानिक ऐसे विशेष सैटेलाइट बना रहे हैं, जो अंतरिक्ष में जाकर बड़े मलबे पर जाल फेंकेंगे या हारपून (भाला) मारकर उसे पकड़ेंगे और खींचकर पृथ्वी के वायुमंडल की तरफ ले आएंगे।

कुछ जापानी कंपनियां ऐसे सैटेलाइट्स का परीक्षण कर रही हैं, जिनमें बहुत शक्तिशाली चुंबक लगे होंगे। ये चुंबक लोहे और धातु के मलबे को अपनी ओर आकर्षित करके चिपका लेंगे। इस तरह कई और तकनीकें अपनाई जा रही हैं। संभव है इसका स्थायी समाधान खोज लिया जाएगा। *

गजल
हबीब कैफी

चला गया कोई

उम्र अपनी बढ़ा गया कोई
नाम लेते ही आ गया कोई
मैंने थामा था हाथ कांटों में
फूल पाकर छुड़ा गया कोई
उसके सारे निशान जिंदा हैं
कैसे कह दूं चला गया कोई
इक तने पर लिखे थे बरसों से
नाम दोनों मिटा गया कोई
नींद यूं ही नहीं हुई गायब
तेरे किस्से सुना गया कोई
सिर्फ इक बात मैंने पूछी थी
बातें क्या-क्या सुना गया कोई
जिक्र जब भी वफा का आया है
सर झुका कर चला गया कोई

व्यंग्य / सूर्यकुमार पांडेय

महंगाई से मुलाकात

चाहने को हम भी बहुत कुछ चाहते हैं। हमारी पहली चाहत तो यह ही है कि अपने पास अकूत वैध संपत्ति हो। वैध इसलिए, क्योंकि बुल्डोजर से सबको डर लगता है। बड़े-बड़े मुर्गे हलाल हो गए, फिर भला इस पिद्दी के शोरबे की क्या ही औकात है? हमारी दूसरी चाहत है कि महंगाई नाम की चीज को अपने देश से धक्के मार कर बाहर निकाल देना चाहिए। अंतर्मन में कुछ ऐसी भी चाहतें हैं, जिन्हें सार्वजनिक कर दें तो जूते पड़ने लगेंगे। हमारे एक मित्र ने एक महिला को सिर्फ 'आइ लव यू' कहा था। एक वह दिन था और एक आज का दिन है, अस्पताल से लौटकर आया है और प्रत्येक महिला को बुआ-दीदी से नीचे नहीं बोलता है।

इंसान कामनाओं का कोष है। मनुष्य की इच्छाएं अनंत हैं। सबको फेसबुक-एक्स आदि के दरिया में डालकर अपनी भड़ास निकालने से अच्छा है कि भाग्यवादी बन जाओ। 'जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिए।' हम भी रह ही रहे हैं। घोर महंगाई की चपत खाकर भी हंस रहे हैं। यूं किसी के चाहने या न चाहने से क्या होता है? भला मैं भी कहां चाहता था, फिर भी आज महंगाई से मेरी मुलाकात हो ही गई। वैसे यह कोई नई बात नहीं है। पहले कभी-कभार भेंट होती थी। इन दिनों वह मुझसे रोज ही किसी-न-किसी बहाने मेरे घर पर मिलने आ जाया करती है। जब मैं घर से बाहर रहता हूं तो वह वहां पर भी मुझसे टकरा जाती है। बाजार जाऊं तो वहां भी मिल जाती है। सड़क पर चल रहा होता हूं, तब भी वह हमारा पीछा नहीं छोड़ती है। पत्नी कहती है, 'यह मुई मेरी सौत है। इसकी निगाह तुम्हारे शरीर के साथ तुम्हारी जेब पर भी रहती है।'

मैं अकसर यह महसूस करता हूं कि मेरी जेब में रखा हुआ पर्स भी जरूरत से ज्यादा दुबला हो चुका है। महंगाई डायन के प्रकोप के चलते 'चंद क्वॉइन' ही शेष बचे हुए हैं। गनीमत है कि वह पूरी तरह खाली नहीं हुआ है। शायद इसी दुबले पर्स पर महंगाई डाका डालने पर उतारू है। जिसके पास धन नहीं है, उसको न चोरी का डर सताता है और न रहजनी का। उसे एकमात्र डर सताता है तो महंगाई का।

मेरा प्रतिदिन महंगाई से इसी तरह मिलना होता रहा तो एक दिन इस गरीब की जान ही निकल जाएगी। आप जानते हैं कि गरीब की जान उसकी हलक में अटकी होती है। यह उस चिड़िया की तरह होती है, जिसे जब तक दाना-पानी मिलता रहता है, चहकती रहती है, जिस दिन मिलना बंद हो गया, फुर्र से उड़ जाती है। लोग यूं ही प्राण को पखेरू नहीं कहते हैं।

मैं इस नामाकूल महंगाई से कितना भी बचना चाहता हूं, लेकिन वह है कि हाथ धोकर मेरे गले पड़ती जा रही है। आज महंगाई फिर एक बार मुझसे मिलने आई है। वह आवश्यकता से अधिक मोटी दिख रही है। पिछली बार जब उससे मिलना हुआ था, तब भी वह मोटी ही थी, लेकिन इस बार उसके शरीर की चर्बी पर एक और परत चढ़ चुकी है। वैसे भी जो प्रतिदिन दूसरों की जेब पर डाका डालता हो, उसका मोटा हो जाना अचरज की बात नहीं है। मैं अपने आस-पास के ऐसे तमाम लोगों को जानता हूं, जो दूसरों को लूटते रहते हैं और मोटे हो जाते हैं। महंगाई भी पुष्ट हो रही है। वह मुझसे कहने लग गई, 'तुम मेरे नाम का रोना रोते रहते हो, मैंने सोचा आज एक बार और मिल लेती हूं! कहो, कैसे मिजाज हैं?' मैंने कहा, 'मिजाज की छोड़ो। तुमने हमें कहीं का नहीं छोड़ा है। तुम जिस अनुपात में मोटी होती चली जा रही हो, हम उसी अनुपात में दुबले हो रहे हैं। उधर तुम्हारी खुराक बढ़ती जा रही है, इधर हम अपने को किसी दिहाड़ी मजदूर की पगार जैसा बेबस पाते हैं।'

महंगाई जैसे आज विश्व हास्य दिवस मनाने के मूड में थी। वह पहले खूब हंसी, फिर मुझे छेड़ती हुई बोली, 'देख रही हूं। तुम्हारे पांवों में बेबसी के घुंघरू बंधे हुए है, फिर भी तुम ठुमक रहे हो। तुम जैसे बकरे को कहां पता है कि कल मैं तुमको किस भारी-भरकम रूप में मिलने वाली हूं!' *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

विडंबनाओं पर कटाक्ष

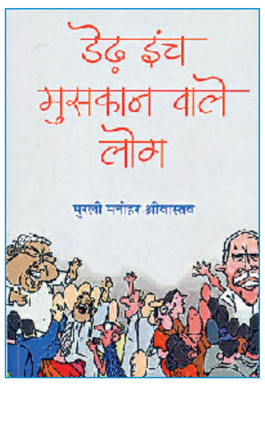

आज के बहुरूपिए समय में तमाम तरह की विडंबनाओं और विसंगतियों के संग जीने के लिए हम सब इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि किसी भी प्रकार के विद्रूप में असहज महसूस नहीं करते हैं। लेकिन एक व्यंग्यकार की सजग दृष्टि न केवल जीवन और व्यवस्था में धंसे विद्रूप को इंगित करती है, उस पर कटाक्ष भी करती है। सुपरिचित व्यंग्यकार मुरली मनोहर श्रीवास्तव के ऐसे ही चुने हुए 65 व्यंग्यों का संग्रह 'डेढ़ इंच मुसकान वाले लोग' हाल में छपकर आया है। इनमें कहीं वे नेशनल कैरेक्टर से लेकर, आटा से ज्यादा डाटा की चिंता करते नजर आते हैं, तो कहीं चुटकी लेते हुए मीडिया का महिमा मंडन करते दिखते हैं। 'ऑफिस रस' शीर्षक व्यंग्य में वह लिखते हैं, 'जिसे एक बार ऑफिस रस की लत लग गई, वह इसकी प्रॉपर डोज के बिना रह ही नहीं पाता। वह कहीं भी रहे, किसी भी हाल में पड़ा हो, इस रस की प्राप्ति के लिए छटपटाता रहता है।' हर खास-ओ-आम की जिंदगी में आज की तारीख में इंटरनेट डाटा का क्या महत्व हो चुका है, इस बारे में व्यंग्यकार की टिप्पणी ध्यान देने योग्य है। 'आटा और डाटा' शीर्षक व्यंग्य में वह कहते हैं, 'कई बार लगता है कि आटा न भी मिले तो चलेगा पर डाटा खत्म हो गया तो जीकर क्या करेंगे? लड़ाई यह है कि आटा जन-जन तक पहुंचा कि डाटा?' *

पुस्तक: डेढ़ इंच मुसकान वाले लोग (व्यंग्य संग्रह), **लेखक:** मुरली मनोहर श्रीवास्तव, **मूल्य:** 400 रुपए, **प्रकाशक:** विद्या विहार, नई दिल्ली

Mushroom World Ayurved & Food Pvt. Ltd. For Trade Enquiry - +91 888 922 3333

सीजनल टूरिज्म / समीर चौधरी

हर नेचर लवर टूरिस्ट, मानसून में भीगी हरी-भरी पहाड़ी वादियों को करीब से निहारना चाहता है। हालांकि आमतौर पर इस सीजन को ट्रैकिंग के लिए सुटेबल नहीं माना जाता है। लेकिन कुछ ऑफबीट-सुरक्षित हिमालयी ट्रैकिंग स्पॉट्स पर जाकर आप अपनी इस चाहत को पूरा कर सकते हैं। ऐसे ही कुछ बेमिसाल ट्रैकिंग स्पॉट्स पर एक नजर।

मानसून में करिए फुल एंज्वॉय ये हिमालयन ट्रैकिंग स्पॉट्स

मोहक नजारा दिखाए मरखा घाटी, लद्दाख

जुलाई और सितंबर के मध्य में मरखा घाटी (17,060 फीट की ऊंचाई पर स्थित) की दूधिया सफेद नदियां, सुंदर लैंडस्केप और विशाल पहाड़ों की पृष्ठभूमि में हरी-भरी वादियां मन मोह लेती हैं। यहां से कांग यत्से पहाड़ का दिलकश नजारा भी दिखता है। यह ट्रैक लेह से आरंभ होता है और फिर जब आप ऊपर की तरफ बढ़ते हैं तो हेमिस नेशनल पार्क, सुदूर गांवों और आध्यात्मिक ताचा मठ से होते हुए यह सफर यादगार बनता चला जाता है। यहां ट्रैकिंग करते हुए आपको हिमालयन ब्लू शीप, हिमालयन ग्रिफ्फोन, स्नो लेपर्ड और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों का दीदार करने का अवसर भी मिलता है। *

अनुभवी ट्रैकर्स के लिए परफेक्ट परांग ला ट्रैक, हिमाचल प्रदेश

परांग ला ट्रैक (18,400 फीट की ऊंचाई पर स्थित) अनुभवी ट्रैकर्स के लिए परफेक्ट माना जाता है, क्योंकि लद्दाख व स्पीति को जोड़ने वाला इसका पथरीला, तीखी ढलान वाला रूट थोड़ा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। आप इस ट्रैक पर शुरुआत लेह के करजोक गांव से या स्पीति के चिचम/किब्बर गांव से कर सकते हैं। कठिन रास्तों के बावजूद आपको जादुई नजारे देखने को मिलेंगे। इस दौरान आप खिले हुए जंगली फूल, गहरी नीली त्सो मोरिरी झील के अलावा किआंग या तिब्बती जंगली गधों के झुंडों को भी कूदते-दौड़ते हुए देख सकते हैं। इसे विजिट करने का सबसे अच्छा समय जुलाई के मध्य से सितंबर की शुरुआत तक होता है। *

हिडन डायमंड दरमा घाटी ट्रैक, उत्तराखंड

उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में स्थित दरमा घाटी ट्रैक (14,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित) एक छुपा हुआ हीरा कहा जाता है, जो आपको आकर्षक गांवों, घने जंगलों, रोलिंग घास के मैदानों और ग्लेशियर से पोषित धाराओं से रूबरू कराता है। इन सबकी पृष्ठभूमि में होती हैं हिमालय की विशाल ऊंची चोटियां। जब मानसूनी बारिश इस लैंडस्केप को भिगो देती है, तो यह वादी हरियाली और जंगली फूलों की सुगंध से भर जाती है। रास्ते में आपको बर्फ से ढंके पहाड़ मिलेंगे। आप इस दौरान स्थानीय समुदायों की विशिष्ट संस्कृति और मेजबानी का भी आनंद ले सकते हैं। जून से सितंबर इस ट्रैक पर जाने के लिए सबसे अच्छा समय है। *

हसीन वादियों से समृद्ध पिन घाटी, हिमाचल प्रदेश

मानसून में ट्रैकिंग के लिए एक अन्य बेहतरीन ट्रैकिंग स्पॉट पिन घाटी (15,780 फीट की ऊंचाई पर स्थित) है। यहां हरे-भरे जंगलों, विशाल घास के मैदानों, पथरीले रास्तों, बर्फ से ढंके मैदानों और ठंडे रेगिस्तानों का फोटो-फ्रेंडली नजारा देखने को मिलता है। यह ट्रैकिंग मुध नामक गांव से आरंभ होती है। पूरी तरह बर्फ सं ढंकी झोपड़ियों की पृष्ठभूमि में मटर और जौ के खेत और तेज हवाओं के साथ झूमते पेड़-पौधे आपका मन मोह लेंगे। इस ट्रैकिंग के दौरान आप प्राकृतिक गर्म पानी के चश्मों के लिए विख्यात खीरगंगा पर रुक सकते हैं। पिन नेशनल पार्क के साथ गेचांग, का और थंगो जैसे स्थान देखना न भूलें। यहां जाने के लिए सबसे अच्छा समय जुलाई से मध्य सितंबर तक माना जाता है। *

वन्य-जीवन से दीदार कराता तोसामैदान ट्रैक, कश्मीर

इस मौसम में ट्रैकिंग की सोच रहे हैं तो तोसामैदान ट्रैक (12,460 फीट की ऊंचाई पर स्थित) आपकी बकट लिस्ट में अवश्य होना चाहिए। कश्मीर के गुलमर्ग में स्थित यह ट्रैक विशाल पीर पंजाल रेंज, अल्पाइन घास के मैदान, शंकुधारी और चीड़ के जंगलों, चमचमाती झीलों और बर्फ से ढंके पहाड़ों से होकर गुजरता है। इस मार्ग पर ट्रैकिंग के दौरान विभिन्न हिमालयी वन्य जीवों जैसे कस्तूरी हिरण, लेपर्ड और विभिन्न प्रजातियों की मुर्गियां आदि को देखने का मौका आपको मिलेगा। यहां ट्रैकिंग करने का सबसे अच्छा समय जुलाई से सितंबर तक का होता है। *

सेल्फ इंप्रूवमेंट / नरेंद्र कुमार

किसी भी प्रोफेशन में ग्रो करने के लिए लगातार सीखना और खुद को बेहतर बनाने की क्षमता का होना जरूरी है। ऐसा तभी हो सकता है, जब आपको अपनी कमियां पता हों। कमियां पता लगाने के लिए बॉस ही नहीं कुलीग्स, सीनियर्स का फीडबैक भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

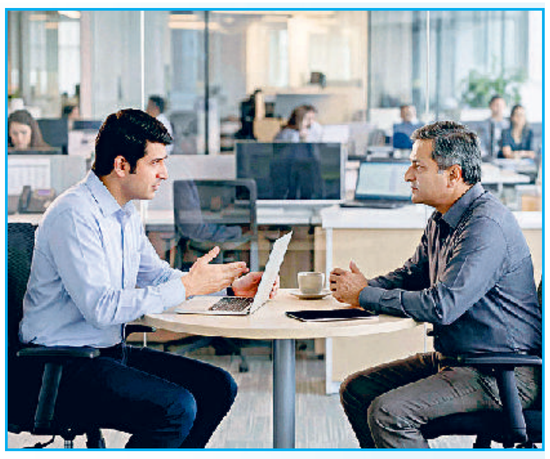

करियर ग्रोथ के लिए इंपॉर्टेंट है फीडबैक

आज के दौर में प्रोफेशनल दुनिया में कामयाबी के लिए सिर्फ मेहनत करना ही काफी नहीं है। कंपनियां अब अपने स्टाफ में ऐसे लोगों को चाहती हैं, जो हर समय सीखने को तैयार रहें। जो अपनी कमियों को पहचान सकें और किसी के द्वारा बताए जाने पर उसमें जरूरी सुधार करें। यही कारण है कि फीडबैक आज करियर ग्रोथ का एक महत्वपूर्ण जरिया बन चुका है। वास्तव में फीडबैक एक ऐसा आईना है, जिसमें हम अपनी प्रोफेशनल इमेज बहुत अच्छी तरह से देख सकते हैं। जो लोग इस आईने से डरते नहीं, वे लोग सचमुच इससे बहुत कुछ सीखते हैं।

क्या है फीडबैक: फीडबैक का मतलब केवल आपकी गलती बताया जाना नहीं होता। यह आपके प्रोफेशनल बिहेवियर, काम की प्रस्तुति और क्षमता का किया गया मूल्यांकन होता है, जिसमें सुझाव भी शामिल होता है। इसे अगर आप सकारात्मक तरीके से लेते हैं तो यह आपको बेहतर बनाने में मदद करता है और अगर आप इसे अपनी व्यक्तिगत अलोचना के तौर पर लेते हैं, तो इससे आपको नुकसान हो सकता है।

जरूरी है फीडबैक: डेढ़-दो दशक पहले नौकरियां आज के मुकाबले अपेक्षाकृत स्थिर हुआ करती थीं। लोग बीस-बीस, तीस-तीस साल तक एक ही कंपनी में गुजार देते थे। आज के समय में कंपनियां जरूरी नहीं है कि अगर किसी को अपने यहां रख लें तो उसे सालों-साल ढोती ही रहें। हां, आज भी दस पर्सेंट ऐसे कर्मचारी होते हैं, जो कई साल एक ही कंपनी में गुजार देते हैं। सवाल है, ऐसे थोड़े लोगों में क्या खूबी होती है कि आज भी कंपनियां इन थोड़े से लोगों को अपने साथ लंबे समय तक बनाए रखना चाहती हैं? दरअसल, आज कंपनियां उन्हीं कर्मचारियों को लंबे समय तक अपने साथ बनाए रखने में तरजीह देती हैं, जो अपनी प्रोफेशनल स्किल को लगातार बेहतर बनाने की कोशिश में रहते हैं और जब भी उन्हें कुछ सीखने का मौका मिलता है, जल्द से जल्द सीखने की कोशिश करते हैं। जो अपनी गलतियों में सुधार करने के लिए तैयार रहते हैं, समय और परिस्थितियों के मुताबिक काम के तौर-तरीके में जरूरी बदलाव करते हैं और टीम के साथ बेहतर तालमेल बनाए रखते हैं। वास्तव में ये क्वालिटीज फीडबैक के बेहतर उपयोग के नतीजे के रूप में सामने आती हैं।

फीडबैक बदलता है दिशा: कई बार लोगों को खुद अपनी कमजोरियों का अंदाजा नहीं हो पाता। ऐसे में अगर आप स्वयं को मिले फीडबैक के बाद अपने काम की गुणवत्ता के बारे में जरूरी समझकर, अपनी कमी को सुधारने की कोशिश करते हैं, तो यह कोशिश आपके लिए न केवल प्रमोशन बल्कि आगे चलकर टीम लीड करने की राह भी खोलेगी। यहां सीनियर्स को फीडबैक देने के तरीके के बारे में भी समझना जरूरी है। अकसर सीनियर्स गलत तरीके से या गुस्से में फीडबैक देते हैं। मसलन, किसी के काम में उन्हें कोई कमी नजर आती है, तो वह छूटते ही कह देते हैं, 'तुम हमेशा ही गलत काम करते हो।' इससे आपका कुलीग असहज हो जाता है। होना यह चाहिए कि किसी कुलीग या जूनियर को फीडबैक दें तो उसमें केवल कमी निकालने की बजाय उसके काम को और बेहतर बनाने के सुझाव पर फोकस होना चाहिए।

फीडबैक लेने का सही तरीका: फीडबैक देने के सही तरीके की तरह ही इसे लेने का तरीका भी सही होना चाहिए। सही तरीका यह है कि हम अपने काम में खामी निकालने वाले व्यक्ति की बात को ध्यान से सुनें, उसे बीच में कतई न टोकें। आप अपने लिए दिए गए महत्वपूर्ण सुझाव को लिख लें, ताकि बाद में जब अकेले में हों, तो उसे और बेहतर तरीके से समझ सकें। कोई भी फीडबैक मिलने पर आप सवाल पूछ सकते हैं, लेकिन यह सवाल रिएक्शन या ऑब्जेक्शन न लगे बल्कि आपको दी जा रही सलाह को और स्पष्ट किए जाने के संबंध में होना चाहिए या फिर बेहतर करने की इच्छा से संबंधित होना चाहिए। *

पुराने दौर से लेकर आज के समय में भी दुनिया भर के देशों में जन्मदिन के उत्सव को अलग-अलग तरीके से मनाया जाता रहा है। कुछ जगहों की परंपराएं तो बहुत ही अजब-अनोखी हैं। इनमें से कुछ दिलचस्प परंपराओं के बारे में यहां बता रहे हैं।

बर्थ-डे सेलिब्रेशन के अजब-अनोखे तरीके

बच्चों का 'किंडरफेस्ट' सेलिब्रेशन, जर्मनी

जन्मदिन पर 'पिन्याटा' फोड़ने की प्रथा, मैक्सिको

रोचक / नेहा जैन

बर्थ-डे का नाम सुनते ही सबसे पहले आपकी कल्पना में चारों तरफ सजे हुए रंग-बिरंगे गुब्बारे और मेज पर रखा सजा हुआ केक आता होगा। केक काटना आज जन्मदिन के उत्सव का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। लेकिन केक के आविष्कार के पूर्व या उसके बाद भी दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में लोग किस तरह बर्थ-डे सेलिब्रेट करते थे, यह जानना बहुत दिलचस्प है।

प्राचीन यूनान (ग्रीस): प्राचीन काल में यूनान देश के लोग जन्मदिन के अवसर पर चंद्रमा की देवी आर्टेमिस के सम्मान में गोल आकार का शहद वाला केक बनाते थे, जो चांद का प्रतीक माना जाता था। केक पर जलती मोमबत्तियां चांद की चांदनी की तरह चमकती थीं। उनका मानना था कि मोमबत्तियों का धुआं उनकी प्रार्थनाओं को देवताओं तक पहुंचाता है।

रोमन सभ्यता: प्राचीन रोम में भी जन्मदिन के अवसर पर आटे, मेवों और शहद से बने केक या मीठी ब्रेड खिलाने का चलन था।

प्राचीन मिस्र (इजिप्ट): प्राचीन मिस्र के फराओ (राजाओं) के राज्याभिषेक के दिन को उनका 'जन्मदिन' माना जाता था, जिसे भव्य उत्सव के रूप में मनाते थे। इस अवसर पर विशेष तरह के कई पकवान बनाए जाते थे।

जर्मनी का किंडरफेस्ट: 18वीं शताब्दी में जर्मनी में बच्चों के जन्मदिन पर विशेष उत्सव मनाया जाता था, जिसे 'किंडरफेस्ट' कहा जाता था। यहां बच्चे की उम्र के अनुसार केक पर मोमबत्तियां लगाई जाती थीं और एक अतिरिक्त मोमबत्ती गुड लक के लिए रखी जाती थी।

ऐसे भी करते हैं बर्थ-डे सेलिब्रेट: आज भी दुनिया के अलग-अलग देशों में जन्मदिन को अनूठे तरीकों से मनाते हैं। इनमें से कुछ के बारे में यहां बता रहे हैं।

चीन: चीन में बच्चे के बर्थ-डे पर केक की जगह लंबी उम्र के प्रतीक के रूप में 'लॉन्जिविटी नूडल्स' खाए जाते हैं। मान्यता है कि नूडल्स जितने लंबे होंगे, उम्र उतनी ही लंबी होगी। हालांकि अब वहां केक के साथ भी बर्थ-डे सेलिब्रेशन लोकप्रिय है।

ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड: इन दोनों देशों में बर्थ-डे के अवसर पर फलों और क्रीम से सजी 'पावलोवा' केक बनाया और खाया जाता है।

जापान: यहां 3, 5 और 7 साल का होने पर बच्चों का जन्मदिन विशेष उत्सव के रूप में मनाते हैं, जहां वे पारंपरिक किमोनो पहनकर मंदिर जाते हैं। यह परंपरा शिकी-गो-सान कहलाती है।

मैक्सिको: यहां जन्मदिन की पार्टियों में 'पिन्याटा' फोड़ने का रिवाज है। यह कागज से बना बड़ा-सा खिलौना या गुब्बारा होता है। इसे कैंडी और छोटे-छोटे खिलौनों से भरा जाता है, फिर ऊंचाई पर लटका दिया जाता है। फोड़ने पर इससे निकलने वाले उपहारों को बच्चे बड़े उत्साह से लूटते हैं।

दक्षिण कोरिया: यहां जन्मदिन की सुबह 'मियेओक-गुक' (सीवीड सूप) पीना अनिवार्य माना जाता है। यह मां के प्रति सम्मान जताने का तरीका है, क्योंकि प्रसव के बाद मांएं इसे खाती हैं।

डेनमार्क: डेनमार्क में यदि किसी के घर के बाहर राष्ट्रीय ध्वज लहरा रहा हो तो इसका मतलब है कि घर में किसी का जन्मदिन है।

कनाडा: कनाडा में कुछ जगहों पर बर्थ-डे पर उस व्यक्ति की 'नोज ग्रीसिंग' की परंपरा है। माना जाता है कि नाक पर मक्खन लगाने से आने वाले साल में उसकी मुसीबतें फिसल कर दूर चली जाएंगी। कनाडा और अमेरिका में लड़कियों के 16वें जन्मदिन को बड़े उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसे स्वीट सिक्सटीन फेस्टिवल के रूप में मनाते हैं।

लैटिन अमेरिका: लैटिन अमेरिकी देशों में लड़कियों के 15वें जन्मदिन को विशेष धूमधाम से मनाया जाता है, जो उनके बचपन से वयस्कता की ओर बढ़ने का प्रतीक होता है। *

भारत में बर्थ-डे सेलिब्रेशन

अपने देश भारत में जन्मदिन पर मंदिर जाने, अपने से बड़ों का आशीर्वाद लेने और नए कपड़े पहनने आदि का रिवाज है। हालांकि महानगरों में आजकल बर्थ-डे पर केक काटना पॉपुलर हो गया है। लेकिन भारत में पारंपरिक रूप से इस अवसर पर खीर, मिठाई या हलवा खिलाया जाता है।

अनूठे बर्थ-डे केक्स

बर्थ-डे केक से जुड़ी कुछ बातें बहुत ही इंट्रेस्टिंग हैं।

भारत का सबसे भारी बर्थ-डे केक: भारत का सबसे भारी और लंबा बर्थडे केक 5.7 टन का था। यह विशाल केक जनवरी 2020 में भारतीय अभिनेता 'रॉकिंग स्टार यश' के जन्मदिन के अवसर पर बेंगलुरू, कर्नाटक में बनाया गया था। इसे बनाने में 22,500 अंडे, 1,800 किलोग्राम मैदा और 1,150 किलोग्राम चीनी का इस्तेमाल किया गया था। इस केक को 'श्री राम भवन स्वीट्स एंड बेकरी' के 20 कारीगरों ने 96 घंटों में तैयार किया था।

दुनिया का सबसे महंगा केक: दुनिया का सबसे महंगा केक ब्रिटिश डिजाइनर डेबी विंघम द्वारा वर्ष 2015 में बनाया गया था, जिसकी कीमत लगभग 75 मिलियन डॉलर (करीब 625 करोड़ रुपए) थी। यह केक एक फैशन रनवे की थीम पर आधारित था, जिसमें 4,000 से अधिक असली हीरे और कीमती रत्न जड़े गए थे।

दुनिया का सबसे बड़ा बर्थ-डे केक: यह रिकॉर्ड सन् 1990 में अमेरिका के अलबामा राज्य के फोर्ट पायने शहर के 100वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में बने केक के नाम है।

लेखकों की मेज से उपजा हिंदी सिनेमा का स्वर्णयुग

हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर केवल सितारों का नहीं, बल्कि लेखकों का भी स्वर्णिम समय था। साहित्य से निकली कहानियों और सशक्त पटकथाओं ने उस दौर की फिल्मों को कालजयी बनाया। आज जब बॉलीवुड सशक्त कहानी की कमी से जूझ रहा है, ऐसे में उसे फिर से साहित्य की ओर लौटने की दरकार है।

सिने-ट्रेंड / गौरव द्विवेदी

हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर केवल महान अभिनेताओं का दौर नहीं था, बल्कि महान लेखकों का भी दौर था। 1950, 60 और 70 के दशक में बॉलीवुड की सबसे बड़ी ताकत उसके लेखक हुआ करते थे। उस दौरान फिल्मों की नींव प्रायः साहित्य पर रखी जाती थी और पटकथा लेखक फिल्म निर्माण की प्रक्रिया के केंद्र में हुआ करते थे। यही कारण है कि उस दौर की अनेक फिल्में आज भी प्रासंगिक लगती हैं, जबकि तकनीकी रूप से कहीं अधिक उन्नत आज की कई फिल्में कुछ वर्षों में ही भुला दी जाती हैं।

साहित्य-सिनेमा चलते थे साथ-साथ: हिंदी फिल्मों के उस स्वर्ण युग के पीछे प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन और भारतीय साहित्यिक परंपरा का गहरा प्रभाव था। उर्दू और हिंदी साहित्य से जुड़े अनेक लेखक फिल्म उद्योग में आए। इनमें साहिर लुधियानवी, कैफी आजमी, ख्वाजा अहमद अब्बास, राजेंद्र सिंह बेदी, इस्मत चुगताई, कृशन चंदर, अली सरदार जाफरी, राही मासूम रजा, गुलशन नंदा, कमलेश्वर, मनोहर श्याम जोशी और शैलेंद्र के नाम प्रमुख थे। इन लेखकों ने फिल्मों को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहने दिया, बल्कि समाज, राजनीति और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त दस्तावेज बना दिया।

साहित्य का विस्तार होती थीं फिल्मी पटकथा: उस दौर में पटकथा लेखन सिर्फ घटनाओं का क्रम नहीं था, बल्कि साहित्य का स्वाभाविक विस्तार हुआ करता था। ख्वाजा अहमद अब्बास ने 'आवारा', 'श्री 420', 'जागते रहो' और 'बॉबी' जैसी फिल्मों में सामाजिक यथार्थ को स्वर दिया। राजेंद्र सिंह बेदी ने 'देवदास', 'मधुमती' और 'अनुपमा' जैसी फिल्मों की पटकथाओं में साहित्यिक गहराई जोड़ी। राही मासूम रजा ने 'मैं तुलसी तेरे आंगन की', 'गोलमाल' और बाद में 'महाभारत' (सीरियल) से अपनी पहचान बनाई।

साहित्य से निकली कालजयी फिल्में: यह वह दौर था, जब फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी पर 'तीसरी कसम' बनी, आर. के. नारायण के उपन्यास पर 'गाइड' बनी, बिमल मित्र के उपन्यास पर 'साहिब बीवी और गुलाम' बनी। मन्नू भंडारी, अमृता प्रीतम, धर्मवीर भारती और प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों की रचनाएं भी फिल्मकारों को प्रेरित करती थीं। सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक और मृणाल सेन जैसे फिल्मकारों का प्रभाव भी हिंदी सिनेमा के गंभीर रचनाकारों पर दिखाई देता था।

पटकथा लेखन के स्टार सलीम-जावेद: 1970 के दशक में पटकथा लेखन को नई ऊंचाई सलीम-जावेद की जोड़ी ने दी। 'जंजीर', 'दीवार', 'शोले', 'त्रिशूल', 'डॉन' और 'शक्ति' जैसी फिल्मों ने साबित किया कि मजबूत कहानी और दमदार संवाद किसी भी फिल्म की सबसे बड़ी पूंजी होते हैं। यह संयोग नहीं है कि इन फिल्मों के संवाद आज भी लोगों की यादों में बसे हुए हैं।

बदलने लगीं प्राथमिकताएं: 1980 के दशक में हिंदी सिनेमा की दिशा बदलने लगी। वीडियो कैसेट संस्कृति, टेलीविजन का विस्तार और तेजी से बढ़ते व्यावसायिक दबावों के बीच कहानी की जगह फॉर्मूले ने लेनी शुरू कर दी। 'डिस्को डांसर' और 'हिम्मतवाला' जैसी फिल्मों की व्यावसायिक सफलता ने निर्माताओं को यह विश्वास दिलाया कि संगीत, सितारे और मनोरंजक मसाले, सशक्त कहानी की कमी पूरी कर सकते हैं।

नहीं है कहानियों की कोई कमी: वास्तव में बॉलीवुड की समस्या प्रतिभा की कमी नहीं, बल्कि साहित्य और समाज से दूरी है। हिंदी पट्टी में प्रेमचंद, रेणु, श्रीलाल शुक्ल, अमरकांत, काशीनाथ सिंह, उदय प्रकाश, चित्रा मुद्गल, गीतांजलि श्री, संजीव और नीलोत्पल मृणाल जैसे लेखकों का विशाल संसार मौजूद है। लोककथाओं, इतिहास, ग्रामीण भारत, छोटे शहरों, सामाजिक बदलावों और समकालीन भारत के असंख्य अनुभवों से भरी कहानियां आज भी लिखी जा रही हैं। जरूरत केवल उन्हें पर्दे पर लाने की इच्छा की है।

फिर से देना होगा कहानियों को महत्व: यदि बॉलीवुड को अपनी खोई हुई रचनात्मक ऊर्जा वापस हासिल करनी है तो उसे फिर से लेखकों की महत्ता को स्वीकारना होगा। आखिरकार 'मदर इंडिया', 'दो बीघा जमीन', 'गाइड', 'आनंद' जैसी फिल्मों को कैमरों ने नहीं, कहानियों ने अमर बनाया था। सिनेमा का भविष्य भी वहीं से निकलेगा जहां उसका स्वर्णिम अतीत जन्मा था यानी लेखकों की मेज से। *

(लेखक फिल्म नीति के जानकार हैं)

दक्षिण भारतीय फिल्मों में बरकरार कहानी का महत्व

दक्षिण भारतीय फिल्म उद्योगों ने कहानी की परंपरा को बनाए रखा। मलयालम सिनेमा में एम. टी. वासुदेवन नायर, पद्मराजन, लोहितदास और हाल के वर्षों में दिलीश पोथन तथा श्याम पुष्करण जैसे लेखकों-निर्देशकों ने साहित्य और समाज से जुड़ी कहानियों को जीवित रखा। तमिल सिनेमा में जयकांतन, सुजाता और बाद में वेट्रिमारन जैसे फिल्मकारों ने यथार्थवादी कथाओं की परंपरा को आगे बढ़ाया। इसी का परिणाम है कि 'दृश्यम', 'प्रेमम', 'कुंबलंगी नाइट्स', 'महाराजा', 'असुरन', 'जय भीम', '96', 'कांतारा', 'चार्ली 777' और 'पुष्पा' जैसी फिल्में अपनी स्थानीय संस्कृति में रची-बसी होने के बावजूद राष्ट्रीय और वैश्विक दर्शकों तक पहुंचती हैं। ये फिल्में दर्शाती हैं कि स्थानीयता ही वैश्विकता का रास्ता बन सकती है